किसी भी आपात स्थिति में
तत्काल सहायता हेतु
112 नंबर
मिलाएं

गिरिराज

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2018-2020
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/बागबानी...5, संस्कृति...6-7, कहानी...8, महिला/बाल/विज्ञान जगत...9, पहाड़ी...10

वर्ष 41 अंक 45 शिमला, 7 अगस्त, 2019 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये website:himachalpr.gov.inègiriraj.asp

29 हजार करोड़ के निवेश से 60 हजार युवाओं को मिलेगा रोजगार

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में 'ग्लोबल इंवेस्टर मीट' की तैयारियों की समीक्षा के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए बताया कि प्रदेश में औद्योगिक निवेश आकर्षित करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप सरकार तथा विभिन्न उद्यमियों के बीच अब तक 29000 करोड़ रुपये के निवेश के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि अब तक 253 एमओयू साइन किए जा चुके हैं, जिसमें प्रदेश के 60500 युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि सभी विभागों को अपने-अपने क्षेत्र में निवेश की उपलब्ध संभावनाओं का लक्ष्य निर्धारित करके कार्य करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि आवश्यक हो तो रिलायंस, टाटा, महिन्द्रा, गोदरेज, ऑबराय तथा क्लब महिन्द्रा जैसे अग्रणी पूंजीपतियों के साथ सम्पर्क बनाए रखने के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए (शेष पृष्ठ 11 पर)

फलीभूत होंगे निवेश आकर्षित करने के प्रयास

वन सम्पदा के संरक्षण के एवज में 'ग्रीन बोनस' देने का आग्रह

उत्तराखण्ड के मसूरी में आयोजित हिमालयी राज्यों के सम्मेलन में मुख्यमंत्री ने पहाड़ी राज्यों के लिए समावेशी नीति तैयार करने की वकालत

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने उत्तराखण्ड के मसूरी में आयोजित हिमालयी राज्यों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिमालयी राज्यों के विकास के लिए समग्र, समावेशी और अनुकूल नीति तैयार करने की आवश्यकता है ताकि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और अन्य बाधाओं के बावजूद ये अन्य राज्यों के समान प्रगति कर सकें।

- हिमालयी राज्यों के साझा मंच से तैयार होगा विकास का रोड मैप
- एसडीआरएफ के तहत हिमालयी राज्यों को आवंटित हो पर्याप्त धनराशि
- वर्ष 2022 तक प्राप्त होगा सतत विकास का लाभ

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश की लगभग 66 प्रतिशत भूमि वन क्षेत्र के तहत है और अगर राज्य को पारिस्थितिकीय रुप से व्यवहारिक और वन क्षेत्र में वैज्ञानिक तौर पर वृद्धि की अनुमति मिलती है तो प्रदेश को लगभग चार हजार करोड़ रुपये का अतिरिक्त वार्षिक राजस्व हासिल हो सकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कानूनों और अदालतों के आदेशों के कारण राज्य न तो अपनी वन सम्पदा से पूर्ण रूप से राजस्व प्राप्त कर पा रहा है और न ही बड़े पैमाने पर भौगोलिक क्षेत्रों में विकासात्मक गतिविधियां कार्यान्वित कर पा रहा है। इसलिए, वन सम्पदा का सम्पूर्ण दोहन करने पर पाबंदी के एवज में हिमाचल प्रदेश को हो रहे करोड़ों रुपये के राजस्व के नुकसान के लिए ग्रीन बोनस दिया जाना चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने वित्त आयोग व केन्द्र सरकार से राजस्व घाटे वाले राज्यों को पर्याप्त अनुदान देने का आग्रह किया ताकि इन राज्यों के पास पूंजी निवेश के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि हिमाचल में जीएसटी से आने वाले राजस्व में भारी गिरावट दर्ज की गई है। उन्होंने वित्त आयोग से राज्य को शेष 33 महीनों के लिए जीएसटी की उचित दरों का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि राज्य में पर्यटन की अपार क्षमता है लेकिन रेल और हवाई यातायात (शेष पृष्ठ 11 पर)

हिमालयी राज्यों को विकासात्मक जरूरतों के लिए पुनः 90:10 अनुपात से धन प्रदान करने के लिए केन्द्र सहमत

पहाड़ों में तेज होगी विकास की रफ्तार

केन्द्र सरकार ने देश के पहाड़ी राज्यों में विकास की गत को तेज करने के लिए अनेक मांगों को स्वीकार कर लिया है। केन्द्र सरकार पहाड़ी राज्यों में चल रही विकासात्मक परियोजनाओं के लिए पुनः 90:10 के अनुपात में वित्तीय सहायता प्रदान करने पर सहमत हो गई है। इसके अतिरिक्त हर घर को नल उपलब्ध करवाने के लिए अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध करवाने की मांग को भी स्वीकार किया गया है। यह जानकारी गत दिनों शिमला में सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ने दी।

उन्होंने कहा कि पहाड़ी राज्यों द्वारा पेयजल के सम्बन्ध में दिए गए अधिकतर प्रस्तावों को 'हर घर में नल से जल' योजना के अंतर्गत शामिल करने का आश्वासन दिया गया है। यह निर्णय केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने दिल्ली में गत दिनों इस योजना के आरम्भ होने से पूर्व, विभिन्न राज्यों के सचिवों के साथ आयोजित बैठक में लिया गया है। प्रदेश की ओर से सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग के सचिव डॉ. आर.एन. बत्ता, प्रमुख अभियन्ता नवीन पुरी, मुख्य अभियन्ता एम.एन. सैनी ने भी इस बैठक (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्यमंत्री ने की तीन तलाक विधेयक की सराहना

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को तीन तलाक देने की प्रथा पर रोक लगाने सम्बन्धी ऐतिहासिक विधेयक को संसद द्वारा पारित करने के लिए केन्द्र सरकार की सराहना की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि तीन तलाक विधेयक पास होने से मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को न्याय मिलेगा ओर सम्मान प्राप्त होगा। यह एक ऐतिहासिक निर्णय है जिसका श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जाता है। हिमाचल में मुस्लिम समुदाय विशेषकर मुस्लिम महिलाओं ने इस विधेयक का व्यापक रूप में स्वागत किया जिससे मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक के नाम पर होने वाले अत्याचार से निजात मिलेगी।

राष्ट्रपति ने दी विधेयक को मंजूरी

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर व हिमालयी राज्यों के मुख्यमंत्री मसूरी में केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण की उपस्थिति में नीति आयोग के उपाध्यक्ष को ज्ञापन सौंपते हुए।

कृमि नाशक अभियान में हिमाचल विश्व में अव्वल

स्वास्थ्य मंत्री श्री विपिन सिंह परमार ने कहा कि पैरासिटिक वॉर्मज और सॉलिड-ट्रांसमिटेड हेल्मिंथ (एसटीएच) फॉलो-अप सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल प्रदेश ने न केवल देश में बल्कि विश्व भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रदेश में 1-19 आयु वर्ग के सभी बच्चों में अनुमानित न्यूनतम 0.3 प्रतिशत वॉर्मज पाए गए।

स्वास्थ्य मंत्री ने शिमला में कहा कि बच्चों के पेट के कीड़े खत्म करने में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाला हिमाचल पहला राज्य बन गया है। एसटीएच फॉलो-अप सर्वेक्षण की रिपोर्ट तथा निष्कर्षो की जानकारी प्रदान करने के लिए आयोजित समारोह के दौरान डिवॉर्मिंग कार्यक्रम से जुड़े स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, शहरी विकास तथा ग्रामीण विकास विभाग जैसे अन्य विभागों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि सभी सम्बद्ध विभागों के भरसक प्रयासों के कारण ही प्रदेश में मिशन मोड पर डिवॉर्मिंग अभियान आयोजित किया गया। (शेष पृष्ठ 11 पर)

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान

शिमला, सिरमौर व मण्डी को राष्ट्रीय पुरस्कार

केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' (बीबीबीपी) योजना के अन्तर्गत जागरूकता उत्पन्न करने व सभी स्तरों पर बेहतर गतिविधियों के संचालन लिए पुरस्कृत किए जाने तीन जिलों शिमला, भी चयनित किया है। बीबीबीपी के अन्तर्गत करने व बेहतर प्रदर्शन राज्यों व केन्द्र शासित राज्यों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। ये पुरस्कार 7 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में आयोजित होने वाले एक कार्यक्रम के दौरान प्रदान किए जाएंगे, जिसकी अध्यक्षता केन्द्रीय महिला एवं (शेष पृष्ठ 11 पर)

अभियान में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए देश के 648 जिलों में से हुआ चुनाव

में सराहनीय कार्य के वाले जिलों में प्रदेश के सिरमौर और मण्डी को केन्द्रीय मंत्रालय ने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने वाले जिलों,

प्राथमिक पाठशालाओं में आरम्भ होगा 'सम्पर्क स्मार्टशाला कार्यक्रम'

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में समग्र शिक्षा अभियान के अन्तर्गत सम्पर्क स्मार्टशाला कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। यह कार्यक्रम गणित और अंग्रेजी विषयों में प्रदेश के सभी प्राथमिक स्कूलों में लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान की जाए और उनमें सीखने की क्षमता भी बढ़ाई जाए ताकि वे प्रतिस्पर्धी दुनिया के लिए स्वयं को तैयार कर सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि योजना का प्रमुख उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और छात्रों में सीखने की क्षमता को बढ़ाना है ताकि स्कूली शिक्षा को सभी स्तरों पर समावेशी बनाया जा सके। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि यह स्मार्ट-किट निश्चित रूप से राज्य के लाखों छात्रों के लिए वरदान सिद्ध होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सम्पर्क स्मार्टशाला अंग्रेजी और गणित विषयों में (शेष पृष्ठ 11 पर)

गरीबों के लिए वरदान

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना

प्रदेश सरकार का मुख्य उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग के गरीब, जरूरतमंद, असहाय व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा से जोडना है जिसके लिए विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित किया जा रहा है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के माध्यम से चलाई जा रही आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना लोगों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। योजना के तहत आने वाले लोगों को प्रति वर्ष चयनित अस्पतालों में दाखिल होने पर 5 लाख रूपए तक के निशुल्क चिकित्सा उपचार की सुविधा प्रदान की जा रही है। यह सुविधा लोगों को पारिवारिक आधार पर प्रदान की जा रही है। योजना के तहत एक सदस्य या परिवार के सभी सदस्य योजना का लाभ उठा सकते हैं। एक परिवार के लिए एक वर्ष के दौरान बीमा की राशि 5 लाख रूपए होगी तथा इसके लिए कोई भी आयु सीमा निर्धारित नहीं की गई है। प्रत्येक आयु वर्ग के लोग योजना के तहत शामिल हो सकते हैं। जिला हमीरपुर में इस योजना के अंतर्गत अब तक 47 हजार 56 लोगों के कार्ड स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा अन्य एजेंसियों के माध्यम से बनाए जा चुके हैं। योजना के तहत जिला हमीरपुर में 563 लोगों के विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी अस्पतालों में अंतरंग रोगी निःशुल्क उपचार पर 28 लाख, 37 हजार, 900 रूपए की राशि व्यय की जा चुकी है। अस्पताल में भर्ती होने के समय लाभार्थी को अपना राशन कार्ड, आधार कार्ड, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना कार्ड तथा पंजीकृत मोबाईल नम्बर सम्बंधित संस्थान के स्टाफ को उपलब्ध करवाना होगा। साफ्टवेयर के माध्यम से पुष्टि होने के उपरांत उस व्यक्ति को ई-कार्ड प्रदान किया जाएगा। पैकेज का चयन करने के बाद तथा जरूरी दस्तावेजों को जमा करने के बाद लाभार्थी को अस्पताल से निःशुल्क उपचार की सुविधा प्रदान की जाती है। अस्पताल से छुट्टी के समय लाभार्थी को अपनी डिस्चार्ज समरी के दस्तावेज प्रधानमंत्री आरोग्य मित्र को दिखाने होंगे। योजना के तहत क्लेम की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है। योजना का मुख्य उद्देश्य हर वर्ग के पात्र लोगों को बेहतर तथा निःशुल्क चिकित्सा उपचार सुविधाएं उपलब्ध करवाना है। जिला हमीरपुर में 2 लाख 50 हजार लोगों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। योजना के तहत विभिन्न प्रकार के रोगों से सम्बंधित 1800 उपचार प्रक्रियाएं संपन्न करने के अतिरिक्त डे-केयर शल्य चिकित्सा की सुविधा भी प्रदान की जा रही है। स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधा व्यक्ति को पंजीकृत अस्पताल में दाखिल होने पर ही मिलेगी। राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के लाभार्थी भी इस योजना के तहत शामिल किए गए हैं। योजना के अतंर्गत हिमाचल प्रदेश में 175 अस्पताल पंजीकृत किए गए हैं जिनमें 151 अस्पताल तथा 24 निजी अस्पताल शामिल हैं। लाभार्थी योजना का लाभ पूरे देश में किसी भी पंजीकृत स्वास्थ्य संस्थान से उठा सकते हैं।

योजना का मुख्य उद्देश्य हर वर्ग के पात्र लोगों को बेहतर तथा निःशुल्क चिकित्सा उपचार सुविधाएं उपलब्ध करवाना है। इसके अंतर्गत जिला हमीरपुर में 2 लाख 50 हजार लोगों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। योजना के तहत विभिन्न प्रकार के रोगों से संबंधित 1800 उपचार प्रक्रियाएं संपन्न करने के अतिरिक्त डे-केयर शल्य चिकित्सा की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

फीचर हमीरपुर से
आई. डी. राणा

जागरूकता से मिलेगी नशे से मुक्ति

युवा वर्ग हमारे समाज का अभिन्न अंग है लेकिन कुछ युवा वर्ग किशोरावस्था में ही आधुनिकता की चकाचौंध से भ्रमित होकर जिज्ञासावश नशीले पदार्थों के सेवन का शिकार हो जाते हैं। उन्हें यह मालूम नहीं होता है कि वे धीरे-धीरे नशे के आदी व लाइलाज बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। धूम्रपान से जहां कैंसर, सांस का रोग, दमा, खांसी, हृदय रोग तथा गैंगरीन जैसे लाइलाज रोग पैदा होते हैं, वहीं बीड़ी, सिगरेट से फैलने वाले धुएं से अप्रत्यक्ष रूप से गर्भवती महिलाएं व मासूम बच्चे भी भयानक रोगों की चपेट में आ जाते हैं। नशा एक धीमा जहर है जो व्यक्ति को मानसिक, शारीरिक सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर करता है। इसके लगातार सेवन से व्यक्ति अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है। नशा करने वाला स्वयं तो मौत का ग्रास बनता ही है, लेकिन वह समाज विशेषकर अपने परिजनों के लिए भी दुख का कारण बनता है। नशा कोई भी हो, वह व्यक्ति के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास व स्मरण शक्ति को क्षीण करके उसकी रचनात्मकता को दुर्बल बनाता है। नशे के सेवन से व्यक्ति सदैव चिन्तित व उदासीन रहता है। हाथों में पसीना, अकेले में रहने की प्रवृति, भूख न लगना, वजन कम होना, आंखों में लाली, सूजन का होना, आवाज का लड़खड़ाना, शरीर में इन्जेक्शन लगाने के निशान तथा कपड़े मे रक्त के धब्बे, उल्टी आना, शरीर में दर्द रहना, चक्कर आना, सुस्त रहना, अत्यधिक नींद आना, थकान एवं चिड़चिड़ापन, याद्दाशत कमजोर होने, काम में मन न लगना, दैनिक कार्यो और खेलकूद में रूचि कम होना मुख्य रूप से नशे के ही लक्षण है। नशे का सेवन घातक है। नशे के सेवन से शारीरिक विकार जैसे मुंह, गले, लीवर, फेफड़े, दिल, गुर्दे व त्वचा में संक्रमण हो सकता है। इसके अतिरिक्त मुंह, गले, आंत, लीवर व फेफड़ों का कैंसर भी हो सकता है। नशा परिवारिक कलह व झगड़ों को जन्म देता है। नशे के सेवन वाला व्यक्ति चोरी, डकैती, व्यभिचार, तस्करी जैसे अपराधों में संलिप्त हो जाते हैं तथा समाज ऐसे व्यक्तियों की गणना बुरे व्यक्तियों में करता है जिससे व हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। बच्चों को नशे से दूर रखने के लिए अभिभावकों की भूमिका अहम होती है। माता-पिता को चाहिए की वह अपने बच्चों से भावनात्मक दूरी न बनाएं। उनके साथ अधिक से अधिक समय बिताएं तथा बच्चों व उनके साथियों की गतिविधियों पर नजर बनाए रखें। उनके दोस्तों और परिवार वालों की पूरी जानकारी रखें। उनकी बातों को सुनें तथा अधिक से अधिक संवाद उनसे स्थापित करें। खुलकर उनसे बात करें तथा उनकी बात भी ध्यान से सुनें। नशे के गर्त से बचने के लिए पहले हमें स्वयं आदर्श माता-पिता की छवि बच्चों के समक्ष पेश करनी होगी। यदि बच्चा नशे का शिकार है तो तुरन्त डाक्टर से परामर्श लें। आवश्यकता पड़ने पर उसे नशा मुक्ति केंद्रों में भेजने से न कतराएं। समय पर उपचार से नशे से मुक्ति पाई जा सकती है। समाज को नशे से मुक्त करने के लिए हर व्यक्ति को अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए और इससे होने वाली हानियों के विषय में जानकर खुद को इससे दूर रखना चाहिए। सरकार ने भी नशे पर प्रतिबंध लगाया है और यदि कोई भी व्यक्ति नशा करता या नशीले पदार्थ बेचता हुआ पाया जाता है तो सभी को ऐसे अवांछित सामाजिक तत्वों के प्रति कड़ा रुख अख्तियार करना चाहिए ताकि उसे सजा दी जा सके। रेडक्रास के अध्यक्ष एवं उपायुक्त कांगड़ा श्री राकेश कुमार प्रजापति का कहना है कि धर्मशाला में प्रयास भवन तथा नूरपुर में नशा मुक्ति केन्द्र स्थापित किये गये हैं। यहां नशा निवारण केन्द्र में नशे की गिरफ्त में फंसे युवाओं ने नशे के सेवन से निजात पाई है। इन केन्द्रों में नशे के चंगुल से छुटकारा पाने के लिए वर्ष 2018-19 में 329 व्यक्ति जिनमें से 196 तो उपचार के लिए केन्द्र में भर्ती हुए हैं और 133 व्यक्तियों ने बाह्य रोगी के तौर पर उपचार तथा परामर्श प्राप्त किया और सभी नशा सेवन की लत से मुक्त हो कर अपने घर गए हैं।

युवा वर्ग यदि स्वस्थ, सशक्त होगा तभी देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। यह तभी संभव है जब हर व्यक्ति नशीले पदार्थो के सेवन बंद कर दे। युवा ही देश का भविष्य है इसीलिए युवाओं को समझना चाहिए कि नशा जहर है।

फीचर
नसीम बाला

सनवारा में स्थापित होगा कौशल विकास संस्थान

प्रदेश सरकार ने मैसर्ज हिमाचल शिक्षा विकास धर्मार्थ संस्था से समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया जिसके अनुसार सोलन जिले की कसौली तहसील के गांव सनवारा में स्थानीय लोगों के लिए एक डे-स्कूल और कौशल विकास संस्थान की स्थापना की जाएगी। इस संस्थान से सोलन जिले के छात्रों को गुणवत्ता-युक्त शिक्षा प्रदान की जाएगी। समझौता ज्ञापन पर शिक्षा मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज की उपस्थिति में गत दिनों शिमला में राज्य सरकार की ओर से उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. अमरजीत शर्मा और मैसर्ज हिमाचल शिक्षा विकास धर्मार्थ संस्था की ओर से अध्यक्ष सुखजिन्दर जगपाल ने हस्ताक्षर किए। संस्थान का निर्माण 19 करोड़ रुपये से बनने वाले इस संस्थान से लगभग 65 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त होगा। प्रधान सचिव शिक्षा के.के. पन्त और अन्य अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

19 करोड़ की लागत के इस संस्थान में 65 लोगों को मिलेगा रोजगार

प्राकृतिक कृषि से आर्थिकी को मिला बल

किसानों की आर्थिकी बढ़ाने के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं प्रेम लाल और ब्रहम दास

प्रदेश को प्राकृतिक कृषि राज्य बनाने को बढ़ते कदम। दो कृषक बन्धु दस वर्षो से नही कर रहे किसी भी रसायन का प्रयोग। भूमि के हर इंच का हो कृषि के लिए प्रयोग। कृषि के क्षेत्र में नित कर रहे नये प्रयोग।

किसानों की आय को दोगुना करने के लिए सरकार ने अनेक योजनाएं चलाई हैं। यह सरकार के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि पिछले दशकों में कृषि को घाटे का व्यवसाय मानकर खेतों से पलायन कर रहे किसान अब अपनी मेहनत, लगन और नित नये प्रयोग करने की लालसा से नये आयामों को स्थापित करके सफलता की नई परिभाषा को सम्प्रेषित कर रहे हैं। बहुचक्रीय कृषि फसलों का उत्पादन व अपनी आर्थिकी में इजाफा करके अन्य किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हैं।

ऐसे ही दो किसान भाई हैं बिलासपुर जिला के घुमारवीं विधान सभा में फ्योडी गांव के प्रेम लाल और ब्रहमदास जो विगत 10 वर्षों से भी अधिक समय से अपने खेतों में कृषि पोषण के लिए किसी भी प्रकार के रसायन का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। शून्य लागत प्राकृतिक कृषि विधि को अपना कर यह न केवल अपनी 18 बीघा भूमि से भरपूर उपज प्राप्त कर रहे है बल्कि अपने क्षेत्र के किसानों को गोबर व केंचुआ खाद को प्रयोग में लाने के लिए निरन्तर जागरूक व प्रोत्साहित भी कर रहे हैं। उनके प्रयासो का परिणाम है कि उनके गांव के सभी किसान कृषि के लिए आवश्यक नाइट्रोजन, कार्बनडाईऑक्साईड, जल और सौर ऊर्जा इत्यादि 90 प्रतिशत तत्व प्राकृतिक खाद से प्राप्त करके भूमि की उर्वरकता बढ़ाकर भरपूर कृषि उत्पादन कर रहे हैं। फ्योरी गांव का कोई भी किसान वर्तमान में रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं कर रहा है।

66 वर्षीय प्रेमलाल और 63 वर्षीय ब्रहमदास अपने खेतों में मक्की, चना, दाल माश, मूंग, अरहर, सोयाबीन के अतिरिक्त अदरक, हल्दी, जिमीकन्द, अरबी तो उगा ही रहे हैं, साथ में शिमला मिर्च, मूली, खीरा, धनिया, करेला, कद्दू, मटर, बैंगन व मिर्च का भी अच्छा खासा उत्पादन कर रहे हैं। घर में मशरूम की खेती के अलावा यह दो कृषक भाई अपने खेतों मे सेब, अनार, आम, लिची, केला, मौसमी, अंगूर इत्यादि उगाकर अन्य कृषकों को कृषि के व्यावसाय में विस्तार देने के लिए भी उदाहरण बने हैं। इन दोनों कृषक बन्धुओं का कथन है कि कृषि के क्षेत्र में स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं।

प्रदेश में लगभग 75 प्रतिशत लोगों को कृषि व बागबानी के माध्यम से रोजगार प्राप्त हो रहा है। इनका कहना है कि आधुनिक परिवेश में कृषकों को मात्र मक्की, गेहूं, धान इत्यादि गिनी चुनी फसलों तक ही सीमित नहीं रहना है अपितु उन्हें कृषि से जुड़े प्रत्येक उत्पाद को अपनाकर अपनी भूमि में विविध उपजों की सम्भावनाएं तलाशनी होंगी। भूमि के एक-एक इंच का पूरी योजना के साथ प्रयोग करके मिट्टी के अनुरूप बीजों और फसल का चुनाव निस्संदेह किसान की आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी लाने में कारगर सिद्ध होगा।

कृषक परिवार में पले बढ़े हुए प्रेम लाल और ब्रहमदास का रूझान यद्यपि बचपन से ही कृषि की ओर था लेकिन इस व्यवसाय से पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने के चलते प्रेम लाल ने कारपेन्टर और ब्रहमदास से सरकारी नौकरी को अपना लिया था। लेकिन सरकार द्वारा कृषकों के उत्थान के लिए चलाई जा रही जन कल्याण योजनाओं और शून्य लागत प्राकृतिक कृषि पर किये जा रहे प्रयासों से प्रभावित होकर उन्होंने पुनः खेतों का रूख किया। बढ़ेई और सरकारी नौकरी के साथ-साथ उन्होंने कृषि के क्षेत्र में भी अपनी शक्ति झोंक दी। वर्ष 2013 में ब्रहमदास ने लैक्चरर के पद से सेवानिवृत होने के पश्चात नौणी कृषि विश्वविद्यालय सोलन से प्रशिक्षण व मध्यप्रदेश की झांसी में पदमश्री सुभाष पालेकर की कार्याशाला में शून्य लागत प्राकृतिक खेती और बिना रसायन के जहर मुक्त खेती का अनुभव प्राप्त करने के उपरान्त अपने आप को पूर्ण रूप से प्राकतिक खेती खुशहाल किसान का संदेश सम्प्रेषित करने के लिए समर्पित कर दिया। वर्तमान में यह दोनों कृषक बन्धु अपना 8 से 14 घण्टे का समय खेतों में लगाते हैं। घुमारवीं और सदर विधान सभा क्षेत्र के 70 किसान परिवारो के कलस्टर को कृषि उपज क्षेत्र के विस्तार, शून्य लागत प्राकृतिक खेती, केंचुआ और प्राकृतिक गोबर खाद बनाने की विधियों के अतिरिक्त पशुपालन के संदर्भ में भी जानकारियां उपलब्ध करवाते हैं। 20 महिलाओं का समूह देशी गाय को पालने और गोबर को खेती में प्रयोग करने की विधि की जानकारी प्राप्त कर रहा है। अपने कृषक साथियों के खेतों में दस हजार से भी अधिक पौधों को कलमों के माध्यम से निःशुल्क रोपित करने वाले यह कृषक बन्धु किसानों को निःशुल्क खाद के लिए केंचुए भी उपलब्ध करवाते हैं। इन किसान बन्धुओं की उपलब्धियों की लम्बी फेहरिस्त में औषधीय पौधों को उगाने के अतिरिक्त सौ वर्ष तक खराब न होने वाले खाद्य पदार्थ ''मन्नगल'' की उपज के साथ-साथ तीन सौ से भी अधिक औषधीय गुणों से भरपूर सैहजन (मोरिंगां) के पौधे भी उगा रहे हैं। आलू की फसल भूमि के भीतर नहीं अपितु बेल के रूप में विकसित करके आसमानी आलू का नाम देकर उगाने वाले यह कृषक बन्धु प्रगति हल्दी की उपज तीन वर्ष के बदले हर छः माह पश्चात प्राप्त करके अन्य किसानों को अपनी आर्थिकी बढ़ाने के लिए प्राकृतिक खेती की ओर आकर्षित कर रहे हैं। अपने खेतों में फसल के लिए स्वयं उत्पादित बीजों का प्रयोग करते हैं और छिड़काव के लिए 'जीवामृत' को प्रयोग करते हैं। प्रेम लाल और ब्रहमदास जैसी भावना और परिश्रम से जहां लोगों को गुणवक्ता युक्त खाद्य पदार्थ उपलब्ध होने की एक स्वस्थ, सशक्त व स्वच्छ राह बनती नजर आ रही है वहीं प्रदेश सरकार के वर्ष 2022 तक राज्य को पूर्ण रूप से प्राकृतिक कृषि राज्य बनाने के प्रयासों को भी बल मिलता प्रतीत हो रहा है।

फीचर बिलासपुर से
मु. अमीन शेख चिश्ती

इलैक्ट्रिक वाहनों में जीएसटी दरें घटाने का स्वागत

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने 1 अगस्त, 2019 से इलैक्ट्रिक वाहनों पर माल और सेवा कर (जीएसटी) की दरों को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने के जीएसटी परिषद के निर्णय की सराहना की है। उन्होंने कहा कि इन वाहनों में प्रयोग होने वाले चाजर्स पर भी जीएसटी को 18 से घटाकर 5 प्रतिशत करने और स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा इलैक्ट्रिक बसों को किराए पर लेने में दी गई छूट भी सराहनीय कदम है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जीएसटी की दरों में कमी करने से इलैक्ट्रिक वाहन उद्योगों को व्यापक बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि काफी समय से इन दरों को कम करने की मांग चल रही थी। उन्होंने कहा कि यह कदम लोगों को इलैक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित करेगा।

वाहनों पर जीएसटी दर 12 प्रतिशत से हुई 5 प्रतिशत

इस निर्णय से इलैक्ट्रिक वाहनों की कीमतों में भी उल्लेखनीय कमी आएगी तथा देश में इन वाहनों का उपयोग भी बढ़ेगा। इलैक्ट्रिक वाहनों के व्यापक उपयोग से ईंधन के आयात पर भी निर्भरता कम होगी तथा पर्यावरण संरक्षण भी होगा।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील हिमाचल प्रदेश में इस निर्णय का व्यापक प्रभाव पड़ेगा। राज्य सरकार ने पहले ही मनाली जैसे प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में ऐसे वाहन चलाए हैं।

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में गत दिनों हुई जीएसटी परिषद की 36वीं बैठक में प्रधान सचिव (आबकारी एवं कराधान) संजय कुंडु, राज्य आबकारी एवं कराधान आयुक्त डॉ. अजय शर्मा व संयुक्त आयुक्त राकेश शर्मा ने राज्य की तरफ से भाग लिया।

विधान सभा अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने भी इलैक्ट्रिक वाहनों पर माल व सेवा कर (जीएसटी) की दरों को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने के निर्णय की सराहना की।

प्रत्येक वर्ग के योगदान से हिमाचल विकास पथ पर अग्रसर

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने नई दिल्ली में प्रधानमंत्री से भेंट की। यह एक शिष्टाचार भेंट थी। उन्होंने प्रधानमंत्री को अवगत करवाया कि वह हिमाचल प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक संवर्धन तथा बुनियादी ढांचे के विकास आदि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर कार्य करने की परिकल्पना कर रहे हैं।

राज्यपाल ने कहा कि इस खूबसूरत पहाड़ी राज्य के लोग ईमानदार और मेहनती हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के योगदान से वह हिमाचल का विकास के पथ पर अग्रसर करने का प्रयास करेंगे।

प्रधानमंत्री ने कलराज मिश्र को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में मिली नई जिम्मेदारी के लिए बधाई दी। राज्यपाल की धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती मिश्र भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

हरित आवरण में वृद्धि के लिए जरूरी है पौधरोपण

शिक्षा, विधि एवं संसदीय मामले मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने शिमला के उपनगर कैथू में गोल पहाड़ी क्षेत्र में वन विभाग द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में चिनार का पौधा लगाने के उपरांत अपने सम्बोधन में कहा कि विकास और पर्यावरण संरक्षण को परस्पर पूरक बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण तथा पौधारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि न केवल शिमला बल्कि प्रदेश में पानी की कमी से निपटने के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्षों का विस्तार करना होगा।

उन्होंने कहा कि शिमला के हरित वातावरण के कारण देश विदेश का पर्यटक शिमला की ओर आकर्षित होता है उन्होंने कहा कि पर्यटकों के आगमन से जहां रोजगार के साधन सृजित होते हैं वहां आमदनी के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

उन्होंने कहा कि शिमला नगर के लोगों को अधिक से अधिक वृक्षों को रोपित कर शिमला व इसके आसपास के क्षेत्रों को और अधिक सुन्दर व हरा-भरा बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमारे ऋषि-मुनियों व शास्त्रों ने मानव उपयोग की प्रत्येक वस्तु को पूजनीय बताया है जिनमें से वृक्ष श्रेष्ठतम है।

उन्होंने स्थानीय पार्षद व अन्य कार्यकर्ताओं व लोगों से गोल पहाड़ी के सौंदर्यीकरण व उपयोगिता को बढ़ाने के लिए योजना बनाकर प्रस्तुत करने को कहा ताकि अधिक से अधिक पर्यटकों व स्थानीय लोग गोल पहाड़ी के नैसर्गिक सौदर्य का आनन्द ले सकें।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर राजकीय महाविद्यालय कोटशेरा (शिमला) के नवनिर्मित प्रशासनिक एवं विज्ञान खण्ड का लोकार्पण करते हुए।

बॉक्सर आशीष को स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने मण्डी जिले के सुन्दरनगर क्षेत्र से संबंधित बॉक्सर आशीष चौधरी को बधाई दी है जिन्होंने बैंकाक में थाईलैंड अन्तरराष्ट्रीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता के 75 किलोग्राम वर्ग में कोरिया के बॉक्सर को हराकर स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने कहा कि आशीष चौधरी ने अपने शानदार प्रदर्शन से देश और प्रदेश का सम्मान बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि आशीष चौधरी ने बॉक्सर बी.एस. थापा के बाद नई ऊंचाईयों को छुआ है जिन्होंने 1980 में मॉस्को ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

मुख्यमंत्री ने बॉक्सर आशीष चौधरी के परिवार को भी उनकी इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं दी हैं। खेल मंत्री श्री गोविन्द सिंह ठाकुर ने भी इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आशीष चौधरी और हिमाचल बॉक्सिंग संघ को बधाई दी है।

बागबानी विकास योजना से दोगुनी होगी कृषि आय

हिमाचल प्रदेश में कृषि व बागबानी लोगों का मुख्य व्यवसाय है प्रदेश में कृषि आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए एचपीशिवा परियोजना (हिमाचल प्रदेश सब ट्रापिकल हार्टिक्लचर इरिगेशन एंड वेल्यू एडिशन प्रोजेक्ट) शुरू की गई है जिसके तहत 2022 से पूर्व किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह जानकारी सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य, बागवानी व सैनिक कल्याण मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने जोगिन्द्रनगर वन मण्डल के तहत शेरपुर गांव में पीपल का पौधा रोपित कर वन महोत्सव का शुभारम्भ करने के उपरान्त जनसभा को सम्बोधित करते हुए दी। इस क्षेत्र में 3 हेक्टेयर भूमि पर कुल 2400 पौधे लगाए जाएंगे। वन महोत्सव के विशेष अभियान के दौरान मंडी जिला में 110 जगहों में 354 हेक्टेयर भूमि पर 3 लाख 70 हजार 500 पौधे रोपित किए गए जबकि धर्मपुर विधान सभा क्षेत्र में 67 हेक्टेयर भूमि पर 18000 पौधे रोपित किए गए।

जल संरक्षण के लिए 4751 करोड़ की योजना स्वीकृत

श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने कहा मुख्यमंत्री के प्रयासों से भारत सरकार ने प्रदेश में जल संग्रहण के लिए 4751 करोड़ रुपये की परियोजना स्वीकृत की है। एशियन विकास बैंक के सहयोग से लागू की जा रही इस योजना के तहत छोटी नदियों, खड्डों और नालों पर चेक डैम बनाए जाएंगे। उन्होंने ग्राम पंचायत पपलोग के गांव खरोह में खातियों/ बावड़ियां प्राकृतिक तालाब एवं जल स्रोतों के सफाई अभियान में स्वयं शिरकत कर लोगों को संदेश दिया कि जल संग्रहण का क्या महत्व है। हमारे ये परम्परागत जल स्रोत आज भी दूरदराज क्षेत्रों में पेयजल का मुख्य स्रोत्र है। इनकी स्वच्छता के प्रति हम सभी का सजग रहना चाहिए।

चम्बा के सांस्कृतिक वैभव को जीवंत रखने में मिंजर मेले का अहम योगदान

जिला चंबा के ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय मिंजर मेले का हिमाचल प्रदेश विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री हंस राज ने विधिवत रूप से ध्वज फहरा कर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर अजीत भट्ट एवं उनके दल ने पारंपारिक लोक गायन कुंजड़ी मल्हार का गायन किया। इस मौके पर श्री हंसराज ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि चंबा की समृद्ध संस्कृति के संरक्षण एवम संवर्धन के लिए प्रदेश सरकार द्वारा दृढ़ प्रयास किये जा रहे है। जिला चंबा को विकास की नई ऊंचाइयों के साथ आगे ले जाने के साथ-साथ वैभवशाली समृद्ध संस्कृति को भी जीवंत रखने की नितांत आवश्यकता है।

उन्होंने मिर्जा परिवार का आभार व्यक्त करते हुए कहा रियासत काल से भगवान श्री रघुनाथ जी को मिंजर अर्पित करना, आपसी भाईचारा व सामाजिक सौहार्द की भावना का निर्वहन बखूबी से करना एक अनूठी मिसाल कायम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक चंबा चौगान का निर्माण रियासत काल में 84 परगनो की मिट्टी से तत्कालीन राजाओं ने करवाया था उन्होंने कहा कि जिला चंबा को विकास की दृष्टि से हिमाचल के अग्रणी जिलों में शामिल करने के भी भरसक प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस अवसर पर उन्होंने खेलकूद प्रतियोगिता का आगाज करते हुए कहा युवाओं को नशे से दूर रहना चाहिए व अनुशासनात्मक तरीके से खेल कूद प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय मिंजर मेला का विधान सभा उपाध्यक्ष ने किया शुभारम्भ

नगर परिषद चंबा की उपाध्यक्ष नीलम नैय्यर ने विधानसभा उपाध्यक्ष को मिंजर भेंट कर सम्मानित किया।

अध्यक्ष मिंजर मेला आयोजन समिति एवं उपायुक्त चंबा विवेक भाटिया ने विधानसभा उपाध्यक्ष को शॉल एवं टोपी पहना कर सम्मानित किया। संयोजक खेलकूद आयोजन समिति एवं पुलिस अधीक्षक डॉ मोनिका ने उपाध्यक्ष को समृति चिन्ह भेंट किया। उपयुक्त चंबा विवेक भाटिया ने स्वागत संबोधन में कहा कि 4 अगस्त तक चलने वाले मेले में नया चंबा थीम पर आधारित बहुआयामी गतिविधियों को शामिल किया गया है। मेले के दौरान स्वच्छता को सर्वोपरि रखा गया है जिसमें लोगों का सहयोग अपेक्षित रहेगा। स्थानीय कलाकारों को मिंजर मेले में मंच प्रदान किया जा रहा है। इस अवसर पर सदर विधायक पवन नैयर, अध्यक्ष नगर परिषद नीलम नैयर अतिरिक्त उपायुक्त चंबा हेम राज बैरवा, सहायक आयुक्त उपायुक्त चंबा रम्या चौहान उप मंडल अधिकारी नागरिक दीप्ति मंडोतरा व जिला के गणमान्य लोग भी विशेष रुप से मौजूद रहे।

कुल्लू अस्पताल को मिलेगा राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक प्रमाण पुरस्कार

उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधाओं, बेहतरीन प्रबंधन और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अन्य मानकों में श्रेष्ठ पाए जाने पर क्षेत्रीय अस्पताल कुल्लू को प्रतिष्ठित नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस स्टैंडर्स सर्टिफिकेट के लिए चुना गया है। क्षेत्रीय अस्पताल प्रबंधन को यह सर्टिफिकेट दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रीय स्तर के समारोह में प्रदान किया जाएगा। क्षेत्रीय अस्पताल कुल्लू एनक्यूएएस सर्टिफिकेट पाने वाला प्रदेश का पहला चिकित्सा संस्थान होगा।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत करवाए गए व्यापक निरीक्षण और आकलन के बाद ही कुल्लू अस्पताल को एनक्यूएएस सर्टिफिकेट के लिए चयनित किया गया है। निरीक्षण और आकलन के दौरान अस्पताल के 16 विभागों को विभिन्न मानकों के अंतर्गत 90 प्रतिशत से अधिक अंक मिले हैं। क्षेत्रीय अस्पताल

दिल्ली में दिया जाएगा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार

के सम्मेलन कक्ष में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. सुशील चंद्र शर्मा ने बताया कि सर्टिफिकेशन के संबंध में अस्पताल प्रबंधन को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के निदेशक की ओर से पत्र प्राप्त हो चुका है। उन्होंने कहा कि इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चयनित होने पर क्षेत्रीय अस्पताल के सभी चिकित्सक और कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। कुल्लू जिला ही नहीं, बल्कि पूरे हिमाचल के लिए यह गौरव की बात है।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा संचालित क्वालिटी एश्योरेंस प्रोग्राम के तहत एक उच्च स्तरीय टीम ने 10 से 12 जून तक क्षेत्रीय अस्पताल का व्यापक निरीक्षण किया था। इस टीम में शामिल केरल, हैदराबाद और गाजियाबाद के विशेषज्ञों ने अस्पताल के 16 विभिन्न विभागों को 90 प्रतिशत से अधिक अंक दिए हैं। अस्पताल की प्रशासनिक व्यवस्था को सर्वाधिक 98 प्रतिशत और ट्रॉमा सेंटर को 96 प्रतिशत अंक मिले हैं।

हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण
गिरिराज

योग मन को शांत रखने का एक अभ्यास है।

- अज्ञात

नशे को ना–जीवन को हां

नशा एक ऐसी सामाजिक बुराई है जिसकी जड़ें हमारे समाज में गहराई तक फैल चुकी हैं। युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति आज एक ऐसी विश्वव्यापी समस्या है जिसकी रोकथाम एवं इसके दुष्परिणामों से निपटना भारत सहित विश्व के सभी देशों के लिए एक गम्भीर चुनौती बना हुआ है। नशा एक ऐसा जहर है, जिसका सेवन स्वास्थ्य के लिए तो हानिकारक है ही, लेकिन इसकी आदत से ग्रसित व्यक्ति के परिवार और समाज को उससे भी ज्यादा नुकसान उठाना पड़ता है। इसके सेवन से देश भर में हर वर्ष करीब 2 लाख लोग असमय ही मृत्यु के आगोश में चले जाते हैं, बाद में उनके परिवारों को विभिन्न प्रकार की सामाजिक–आर्थिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। यदि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो समाज विशेषकर युवा पीढ़ी को इसके दूरगामी दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य में नशाखोरी से उत्पन्न समस्याओं से निपटने के प्रति बेहद संवेदनशील एवं जागरूक है तथा इससे निपटने के लिए हर स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। हिमाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है जिसकी सीमाएं कई उत्तरी राज्यों के साथ लगती हैं और इन सीमावर्ती क्षेत्रों से नशीले पदार्थों की तस्करी की संभावना सदैव बनी रहती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि नशाखोरी के उन्मूलन के लिए इन राज्यों के सहयोग से कोई ऐसी साझा रणनीति बनाई जाए जो नशे की तस्करी पर अंकुश लगाने में सक्षम हो। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने प्रदेश में सत्ता संभालने के तुरंत बाद देवभूमि हिमाचल में नशाखोरी के समूल नाश के लिए राज्य स्तर पर न केवल गहन मंथन किया अपितु गत वर्ष पड़ोसी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ चंडीगढ़ में पहली बार क्षेत्रीय कॉन्फ्रेंस आयोजित करवाने में अहम भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री की पहल पर आयोजित इस कांफ्रेंस के परिणामस्वरुप पंचकूला में रीजनल कमांड सेंटर की स्थापना की गई जिसमें हिमाचल प्रदेश के दो अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। नशा निवारण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए अभी हाल ही में चंडीगढ़ में हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा राजस्थान राज्यों के मुख्यमंत्रियों और जम्मू कश्मीर, केन्द्र शासित क्षेत्र चंडीगढ़ व दिल्ली के उच्चाधिकारियों के दूसरे क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अंतरराज्यीय स्तर पर नशा तस्करी से निटपने के लिए एक संयुक्त कार्ययोजना को प्रभावी ढंग से लागू करने पर जोर दिया गया। मुख्यमंत्री ने सम्मेलन में सुझाव दिया कि युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए 'नशे को ना–जीवन को हां' अभियान शुरू किया जाना चाहिए। उनका विचार था कि मादक पदार्थों की बिक्री व इनका बढ़ता सेवन आज एक राष्ट्रव्यापी समस्या बन गई है और समाज में मादक पदार्थों के उन्मूलन के लिए एक संयुक्त रणनीति बनाने तथा इसे प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता है। सम्मेलन में मादक पदार्थों की तस्करी से संबंधित सूचना के आदान–प्रदान के लिए एक प्रभावी प्रणाली विकसित करने पर जोर दिया गया, ताकि मादक एवं नशीले पदार्थों की तस्करी में संलिप्त अपराधियों की तत्काल धर–पकड़ कर उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचाया जा सके। इन राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों में सूचनाओं के आदान–प्रदान का तंत्र मजबूत होने से मादक पदार्थों की तस्करी रोकने तथा नशे की तस्करी के नेटवर्क का पता लगाकर उसे जड़ से समाप्त करने में सहायता मिलेगी। प्रदेश में नशाखोरी को उखाड़ फेंकने की दिशा में उठाए गए कारगर कदमों के परिणामस्वरूप हिमाचल में मादक पदार्थों की तस्करी में संलिप्त लोगों की गिरफ्तारियों की दर में इजाफा हुआ है। प्रदेश में इस वर्ष जून तक एनडीपीएस एक्ट के तहत 1622 मामले दर्ज हुए और 141.776 किलोग्राम चरस, 7.095 किलोग्राम अफीम, 3.599 किलोग्राम हेरोइन, 5810 नशे की गोलियां और 50,700 कैप्सूल पकड़े गए। कुल 789 लोगों को गिरफ्तार किया गया। मादक पदार्थों की तस्करी में संलिप्त लोगों में 40 प्रतिशत पंजाब व 25 प्रतिशत हरियाणा राज्य से संबंधित पाए गए, जिससे राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों से हिमाचल में तस्करी की पुष्टि होती है। प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों को सफल बनाने के लिए यह अति आवश्यक है कि इसमें आम लागों को जागरूक करने के साथ–साथ उनकी सक्रिय भागीदारी को भी सुनिश्चित बनाया जाए। चंडीगढ़ में आयोजित इस सम्मेलन में नशाखोरी पर अंकुश लगाने के बारे में हुई चर्चा के परिणामस्वरूप प्रदेश सरकार ने इस दिशा में अपने प्रयासों को और तेज करने का बीड़ा उठाया है। हिमाचल पुलिस द्वारा राज्य में नशे पर नकेल कसने के लिए थाना स्तर पर गठित नशा निवारण कमेटियों के सकारात्मक नतीजों को ध्यान में रखते हुए अब इन्हें पंचायत स्तर पर भी समितियां गठित करने का निर्णय लिया गया है। इन कमेटियों के माध्यम से राज्य में पंचायत स्तर पर प्रधान, पंचायत सदस्यों का एक सुदृढ़ नेटवर्क स्थापित किया जा सकेगा। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में नशाखोरी को जड़ से खत्म कर नशामुक्त एवं खुशहाल हिमाचल का सपना साकार करने में मदद मिलेगी।

स्वयं बनें अपने तारणहार

जब जीवन आपका है, इसे जीना आपको है तो इसका तारणहार भी आप खुद को ही बनाइए। आशय स्पष्ट है कि अपने सुंदर और सुखद भविष्य के लिए अपनी क्षमताओं के दृष्टिगत एक स्वस्थ नजरिया अपनाएं फिर उसे जीने की कोशिश कीजिए। ऐसा माना जाता है कि मानव मस्तिष्क जिस बात पर विश्वास करता है, सोचता है और महसूस करता है–उसे अपने सामर्थ्य से हासिल भी कर लेता है। इस सृष्टि में कुछ भी असंभव नहीं है, हम वह सब कर सकते हैं जो हम सोच सकते हैं और जो हम सोच सकते हैं उसे हासिल भी कर सकते हैं। पिछली एक शताब्दी में विज्ञान, तकनीक और शिक्षा के बलबूते इस भौतिकतावादी जगत में हमारे पास बेहतरीन उपलब्धियां हैं जिनसे आज मानवीय जीवन बेहद सुंदर, आरामदायक एवं श्रेष्ठ बन गया है। आज हमारे पास भी वे सभी सुख सुविधाएं हैं जो दो सौ–चार सौ वर्ष पहले बड़े–बड़े राजाओं– महाराजाओं को भी नसीब नहीं थीं।

महान व्यक्तियों का जीवन वृतांत पढ़ते हैं तो पता चलता है कि शुरुआती वर्षों में बड़ी कठिनाइयों और असफलताओं के बाद अपनी डटे रहने वाली सोच और कठोर परिश्रम के बलबूते उन्होंने महान उपलब्धियां हासिल की थीं और दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बने। इसलिए जरूरी है कि आप भी अपना एक लक्ष्य बनाएं और फिर एक सपना (विजन) लेकर आगे बढ़ें। तय करें कि पहले क्या करना है? क्योंकि अव्यवस्थित और अस्त–व्यस्त तरीके से कार्य करने से तो कामयाबी मिलने से रही। हमेशा अपने अगले दिन में संपन्न की जाने वाली अपनी प्राथमिकताओं को लिखकर ही सोने जाएं। हमेशा घड़ियों की सुईयों के रुख की भांति गतिशील बने रहें और अपने भीतर अहंकार भावना को पनपने ना दें तथा विनम्र, शांत एवं धैर्ययुक्त बने रहें। हीरा ही हीरे को तराशता है, यदि इस कथन के महत्व को समझें तो हमेशा अपने आसपास मौजूद प्रगतिशील सकारात्मक और कामयाब लोगों की संगत करें और उनसे सीखें। हमेशा अपने प्रयत्नों और सोच में ईमानदार, निष्ठावान, वफादार और कर्मठ बने रहें। यह वे गुण हैं जो हमेशा आप को सबसे आगे रखते हैं। रोज सोते जागते सपने देखें और अपनी क्रियाशीलता से उन्हें पूरा करें क्योंकि विजेता कभी हार नहीं मानते और हार मान लेने वाले कभी विजेता नहीं बनते। आपके सपनों के सामने कोई शंका या दुविधा नहीं होनी चाहिए, आपका फोकस किसी बाधा–रुकावट से परे होना चाहिए, आप सीखें लेकिन अपने अहम् और दंभ को परे रखकर सीखें।

अनुज कुमार आचार्य

आपकी कार्यप्रणाली ऐसी हो जहां ठालमटोल या बहानेबाजी ना हो और आपका आत्मविश्वास किसी की राय अथवा सोच से विचलित और गिरने वाला नहीं होना चाहिए। हमेशा मूल्यों और नैतिकता पर आधारित रहकर मिशन मोड पर चलने से ही हमारा रास्ता और सुगम हो जाता है।

अपने लक्ष्य का मात्र पीछा ही ना करें बल्कि उसे जीएं, सपनों में रखें, अपनाएं और अपनी दैनिक कार्य प्रणाली द्वारा उसे हासिल करें। अच्छी ज्ञानवर्धक बातों को पढ़ें, सुंदर सलाह लें, धैर्यवान बने रहें और अपने लक्ष्य को योजनाबद्ध तरीके से हासिल करें। अपने कर्तव्य के प्रति सदैव सजग रहें, निरंतर प्रयास करते रहें, वैकल्पिक योजना भी साथ में रखें। अपनी कमियों को सुधारें, बाधाओं को पहचान कर उनका निवारण करें, अपने विचारों में स्पष्टता रखें, वास्तविक बने रहें और क्रिया आधारित प्रणाली पर चलें। धैर्य पूर्वक डटे रहें, अपने समय का सदैव सदुपयोग करें, सीखने की ललक रखें, दूसरों की गलतियों और असफलताओं से प्रेरणा लेते रहें। कहते हैं कि अपने ऊपर विश्वास और ईश्वर के प्रति आस्था है तो बंद द्वार में भी रास्ता है। आपकी कार्यप्रणाली ही आपके व्यक्तित्व की परिचायक तथा प्रतिबिंब होती है और उसी से लोग आपके बारे में धारणा बनाते हैं। इसलिए आपके कार्य आपकी प्रतिबद्धता को परिभाषित करता नज़र आना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम अपने पास उपलब्ध समय का सम्मान करना सीखें, समय के एक–एक पल का सदुपयोग और दुरुपयोग हमारी सफलता और असफलता की कहानी लिखता है, इसलिए हमेशा चलते रहें।

इस संसार में प्रत्येक प्राणी अलग गुण, प्रतिभा, क्षमता और योग्यता को लिए पैदा होता है। कुछ लोगों की अद्भुत कार्यप्रणाली एवं सफलताओं को देख कर हम उन्हें ईश्वरीय प्रदत क्षमता वाला प्राणी यानी गॉड गिफ्टेड की संज्ञा से नवाजतें हैं। बहुधा ऐसे लोगों की संख्या समाज में नगण्य होती है लेकिन अधिकतर मामलों में तो स्वयं प्रत्येक मनुष्य को अपना तारणहार खुद बनना होता है। सभी के पास एक समान प्रतिभा एवं योग्यता नहीं होती है लेकिन मौके और अवसर लगभग सभी को समान रूप से प्राप्त होते हैं। लिहाजा हमें अपनी क्षमताओं और प्रतिभा को निखार कर परिस्थितियों का लाभ उठाकर अपनी मेहनत तथा परिश्रम से समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। कठिन परिस्थितियों का सामना करने से ही समस्याओं का समाधान मिलता है ना कि उन से भागकर और वही मनुष्य श्रेष्ठ भी माना जाता है जो कठिनाइयों के बीच अपनी राह बनाता है। इसलिए अपनी ताकत का आकलन कीजिए, अपनी क्षमताओं को बढ़ाइए और निरंतर प्रयासरत रहकर कामयाबी हासिल कीजिए।

याद रखिए बीतेगा यह दौर और वह दौर भी बीत जाएगा, संघर्ष की आंधी के बाद एक नया दौर आएगा, डटे रहना मैदान में चाहे कितना भी शोर क्यों न हो, एक दिन यह जमाना तुम्हारे गीत गाएगा।

प्राकृतिक वनों में अप्राकृतिक हस्तक्षेप

जिस प्रकृति पर मनुष्य आश्रित था, लगता है कि अब वही प्रकृति मनुष्य पर आश्रित होती जा रही है। प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता चाहे जितने निकट का रहा है, प्रकृति मनुष्य पर आश्रित नहीं रह सकती। मनुष्य और प्रकृति में यही तो अंतर है। मनुष्य में चाहे जितना परिवर्तन हो जाये, वह तीर–कमान वाले आदिम युग से निकल कर अंतरिक्ष में घूमने लग जाये, लेकिन प्रकृति एक सीमा तक ही अपने में परिवर्तन बरदाश्त कर पाती है। परिवर्तन सीमित या असीमित हो, लेकिन उसका कारण प्राकृतिक होना चाहिये। अप्राकृतिक कारणों से मनुष्य द्वारा किये गये परिवर्तन को प्रकृति पचा नहीं पाती, भले एक सीमा तक वह चुप रह जाये।

आदिम जंगली जीवन से आज के वैज्ञानिक युग तक मनुष्य ने प्रकृति के साथ काफी छेड़छाड़ की जिसका सर्वाधिक प्रभाव वनों पर पड़ा है। हर वर्ष कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ से कमोबेश पूरी दुनिया परेशान है। यह प्रकृति की लाल झंडी ही है। वनों के अभाव में वर्षा के पानी के साथ उपजाऊ मिट्टी बह–बह कर नदी–नालों को भर रही है। नदियों में पानी की जगह मिट्टी भरती जा रही है, जिससे इसकी जल–धारक शक्ति कम होती जा रही है। यह प्रकृति की स्थिति का एक छोटा–सा नमूना मात्र है।

अप्राकृतिक हस्तक्षेप के कारण वनों की प्राकृतिक स्थिति में जो परिवर्तन आया है, उसका प्रभाव वन्यप्राणियों पर पड़ना स्वाभाविक है। वन्यप्राणी वर्षों से जिन वनों में रहते आ रहे हों, मनुष्य द्वारा उनमें अप्राकृतिक हस्तक्षेप के कारण उन्हें अपना स्थान परिवर्तित करना पड़े – यह प्रकृति के विरुद्ध है। इसका परिणाम यह हुआ कि वन्यप्राणियों का जीवन पूरी तरह खतरे में आ गया और उनकी संख्या कम होने लगी। बचे हुए वन्यप्राणियों में से कुछ शिकारियों के शौक और मनोरंजन की वेदी पर चढ़ गये। अब स्थिति ऐसी हो गयी है कि अनेक वन्यप्राणी चिड़ियाखानों तक सिमट गये हैं। वनों में अप्राकृतिक हस्तक्षेप जिस गति से बढ़ा है, यदि उसे सही ढ़ंग से नियंत्रित नहीं किया गया तो वन्यप्राणियों के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह लग जायेंगा और तब ऐसा भी हो सकता है कि वे चित्रों और फिल्मों तक सिमट कर रह जायें ?

प्रतिमा कुमारी

वनों के अंदर पर्यटकों के घूमने और उनके द्वारा कोलाहल तथा छेड़छाड़ करने से वन्यप्राणियों को परेशानी होती है। पर्यटकों और उनके मोटर की घर्घराहट से वनों में न केवल ध्वनि प्रदूषण बढ़ जाता है, बल्कि वायु एवं जल भी प्रदूषित हो जाने की संभावना बनी रहती है। पर्यटकों को वन्यप्राणियों का दर्शन कराना बुरा नहीं है। लेकिन उसका ढ़ंग सही होना चाहिये, ताकि वन्यप्राणियों को परेशानियों का अनुभव नहीं हो। ऐसी व्यवस्था का पालन सभी लोगों द्वारा कराया जाना चाहिये। ऐसा न हो कि कुछ खास लोगों के कारण वन्यप्राणियों को अप्राकृतिक परेशानियां अनुभव होने लगें।

प्रकृति की यह विशेषता है कि यदि हस्तक्षेप नहीं किया जाये तो वह अपना संतुलन कायम रखने में पूर्ण सक्षम है। जल, वायु, पर्वत, नदी, वन्यप्राणी, वनस्पति आदि अभिकर्त्ताओं के माध्यम से प्रकृति अपने संतुलन का काम संपन्न कर लेती है। यह एक स्वतः स्फूर्त प्रक्रिया है।

अप्राकृतिक हस्तक्षेप के कारण वनों की प्राकृतिक स्थिति में जो परिवर्तन आया है, उसका प्रभाव वन्यप्राणियों पर पड़ना स्वाभाविक है। वन्यप्राणी वर्षों से जिन वनों में रहते आ रहे हों, मनुष्य द्वारा उनमें अप्राकृतिक हस्तक्षेप के कारण उन्हें अपना स्थान परिवर्तित करना पड़े – यह प्रकृति के विरुद्ध है। इसका परिणाम यह हुआ कि वन्यप्राणियों का जीवन पूरी तरह खतरे में आ गया और उनकी संख्या कम होने लगी। बचे हुए वन्यप्राणियों में से कुछ शिकारियों के शौक और मनोरंजन की वेदी पर चढ़ गये।

वनों में अप्राकृतिक हस्तक्षेप के कारण हिमालय जैसे प्राकृतिक क्षेत्र का पर्यावरण आज खतरे में है। इस अप्रत्याशित खतरे का मुख्य कारण है प्रशासनिक अदूरदर्शिता, राजनयिकों की कुचाल, अवैध व्यवसाय और स्थानीय ग्रामीणों का अशिक्षित होना। कभी सड़क निर्माण के लिये पहाड़ों की खुदाई की जाती है तो कभी भवन निर्माण के लिये वन उजाड़े जाते हैं। विकास और निर्माण के नाम पर ही यह सिलसिला चलता है और प्रकृति जिसे देख–देख कर बीच–बीच में गुर्राती रहती है। उसकी गुर्राहट को लोग समझ नहीं पाते हैं और कहते हैं कि बाढ़ आ गयी या सूखा पड़ गया। प्रकृति में अप्राकृतिक हस्तक्षेप का नतीजा सन् 1982 में गढ़वाल के चमोली जिला स्थित फूलों की घाटी में देखने को मिला था। इस घाटी में हर साल जुलाई के मध्य से लेकर अगस्त के तीसरे सप्ताह तक फूल खिले रहते हैं। सर्वप्रथम फ्रैंक सिम्थे नाक अंग्रेज पर्वतारोही सन् 1931 में इस घाटी में गया था। उसके बाद धीरे–धीरे यह पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हो गया। विगत वर्षों में सौंदर्य प्रेमियों ने इस घाटी की स्थिति ऐसी कर दी कि इसका मूल आकर्षण घाटी का सौंदर्य ही समाप्त होने लगा। नतीजतन सन् 1982 में यहां एक भी फूल नहीं खिला। इसलिये अगले साल पांच वर्षों तक पर्यटन पर रोक लगानी पड़ी। तब जाकर स्थिति में सुधार हो पाया। विगत कुछ वर्षों में जिस गति से वन विनाश हुआ है, उसी गति से जनसंख्या भी बढ़ी है। वनों की कमी और जनसंख्या का बढ़ना इसी तरह जारी रहा तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि शताब्दी खत्म होते–होते समूचा पर्यावरण तहस–नहस हो जाये। आणविक परीक्षणों और अंतरिक्ष यात्रा जैसी वैज्ञानिक उपलब्धियों के बीच उपेक्षित प्रकृति की कराह स्पष्ट सुनाई पड़ रही है। यदि हम चाहें तो प्राकृतिक वनों में अप्राकृतिक हस्तक्षेप को कम या बंद करके आने वाली दुःसह स्थिति से उबर सकते हैं।

कृषक मित्र

जनजातीय क्षेत्रों की आर्थिकी का संबल कालाजीरा

कालाजीरा हिमालय क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक बहुवर्षीय बूटी है । यह मूल रूप से हिमालय के शुष्क उँचाई वाले क्षेत्रों में समुद्र तल से 1850 से 2800 मीटर तक की उँचाई पर विभिन्न स्थानों पर प्राकृतिक रूप में पाया जाता है। प्रारम्भिक तौर पर इसकी फसल बीज द्वारा पैदा करने की अवस्था तक तीन वर्ष लग जाते हैं। प्रथम वर्ष में बीजों का अंकुरण होता है एवं दो या तीन पतियाँ आती हैं, फिर

✍ डॉ. केहर सिंह ठाकुर

पौधे सूख जाते हैं। दूसरे वर्ष बर्फ पिघलने के बाद छोटे-छोटे कंद अंकुरित होते हैं तथा पनपते पौधों का आकार बड़ा होता है परन्तु इसमें फूल व बीज नहीं बन पाते। तीसरे वर्ष में पौधा फसल देने लग जाता है। कन्दों की उत्पादन क्षमता 10-12 वर्ष तक सक्रिय रहती है।

कालाजीरा के पौधे बर्फ पिघलने के बाद हरियाली लिए हुए नजर आते हैं । मई अंत या जून में इन पौधों पर सफेद फूल आ जाते हैं। परागण मुख्यतः मधु मक्खियों या फिर फूलों का रस चूसने वाली अन्य छोटी -छोटी मक्खियों द्वारा होता है। जून अंत या जुलाई के पहले पखवाड़े तक बीज पक जाते हैं। बीज का रंग गहरा भूरा होता है। बीज के पकने के साथ-साथ ही शाखाओं का सूखना शुरू हो जाता है। नवम्बर तक कंद सुप्तावस्था में रहते हैं । बर्फ पिघलने के बाद ही कन्दों में अंकुरण क्रिया आरम्भ हो जाती है और अन्ततः बीज उत्पादन की क्रिया दोहराती है। यह प्रक्रिया 10-12 वर्षों तक चलती है।

प्रयोज्य भागः इसके बीजों को औषधीय व मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है।

रासायनिक तत्वः इसके बीजों में 2.5 -14 प्रतिशत तक सुगन्धित तेल पाया जाता है जिसमें मुख्यतः कार्बोन, कीटोनज व क्युमिनेल्डीहाईड आदि रासायनिक अवयव पाये जाते हैं।

औषधीय महत्वः कालाजीरा को प्राचीन काल से ही घरेलू तौर पर अनेक प्रकार की पीड़ाओं जैसे पेट दर्द, सिर दर्द, सर्दी, बुखार, पेचिश, अम्ल-पित, बवासीर तथा गले की खराश इत्यादि के निदान में उपयोग किया जाता रहा है। यह एक दुर्लभ मसाला तथा आयुर्वेदिक औषधियों का एक अभिन्न अंग भी है। इसके बीज ऊनी कपड़ों को कीड़ों के आक्रमण से बचाने के लिए भी प्रयोग किये जाते हैं। इनके बीजों से 2.5 - 14 प्रतिशत तथा तनों से 1.25 प्रतिशत तक उत्तम तेल प्राप्त होता है जो कई प्रकार की दवाईयों व बहुमूल्य सुगन्धित तेल बनाने में उपयोग होता है।

कालाजीरा भारतवर्ष में कश्मीर, उतराखण्ड के कुमाऊँ व गढ़वाल और हिमाचल प्रदेश के किन्नौर, लाहौल स्पीति और चम्बा में पांगी तथा भरमौर में पाया जाता है।

जलवायु एवं मृदाः कालाजीरा भारतवर्ष में समुद्र तल से 1800 - 2800 मीटर उँचाई वाले क्षेत्रों की ढलानदार मृदाओं में पाया जाता है। इन क्षेत्रों में शरद ऋतु में भारी हिमपात व ग्रीष्म ऋतु में बहुत कम वर्षा होती है। पौधों की वानस्पतिक वृद्धि फूल आने पर तथा दाने बनने के समय हल्की वर्षा बीज की गुणवता हेतु लाभकारी होती है। अत्यधिक वर्षा भी इसकी फसल के लिए हानिकारक होती है। कभी-कभी अप्रैल-मई में भी बर्फ गिर जाती है जो कि कालाजीरा की फसल को नष्ट कर देती है। दोमट - रेतीली मिट्टी कालाजीरा की फसल की अधिक पैदावार के लिए सर्वोतम पाई गई है।

कालाजीरा को बीज या कन्दों द्वारा उगाया जाता है। इसे प्रारम्भ में बीज द्वारा ही उगाया जाता है जबकि बीज द्वारा विकसित कन्द 3-4 वर्ष बाद ही फसल देने की अवस्था में आता है। इस प्रकार काला जीरा के बीज द्वारा तैयार पौधा तीसरे वर्षा के पश्चात ही बीज उत्पादन की क्षमता रखता है जबकि 4-5 वर्ष के पूरी तरह विकसित कन्द का प्रयोग करने से उसी साल फसल प्राप्त की जा सकती है।

वानस्पतिक नाम: ब्युनियम परसिकम (Bunium persicum)
कुल : एपिएसी (Apiaceae)
प्रचलित नाम: स्याहजीरा, हिमाली जीरा, कश्मीरी जीरा, शाही जीरा, ब्लैक क्यूमिन

भूमि की तैयारीः प्रारम्भिक तौर पर इसकी फसल के लिये खेत में दो या तीन बार गहरी जुताई करनी चाहिए तथा अन्तिम जुताई के समय खेत में 200 किवंटल गोबर की सड़ी खाद प्रति हैक्टेयर मिलाना बहुत आवश्यक है। समतल खेतों में छोटी -छोटी उठी हुई क्यारियाँ बनानी चाहिए जिसमें सिंचाई व जल निकास का उचित प्रबन्ध हो।

बहुवर्षीय फसल होने के कारण आगामी वर्षों में अक्तूबर-नवम्बर में एक हल्की जुताई या निराई-गुड़ाई काफी होती है। जुताई के समय जो भी कन्द भूमि के ऊपरी सतह पर आ जाएँ, उन्हें अच्छी प्रकार से जमीन में 12 से 15 से. मी. तक गहरा दबा देना चाहिए।

बुआई का समयः कालाजीरा के बीजों को प्री-चिलिंग की आवश्यकता होती है इसलिए इसे अक्तूबर-नवम्बर में बोया जाता है तथा बर्फ पिघलने के बाद मार्च में यह अंकुरित हो जाते हैं। बिजाई के लिए 1.5 -2.0 कि.ग्रा. बीज/हैक्टेयर भूमि में काश्त के लिए पर्याप्त होता है।

कन्दः बिजाई के लिए 4 -5 वर्ष पुराने पूरी तरह विकसित कन्द उपयोग किए जाते हैं।

बिजाई एवं रोपण विधिः बीज को 20 से.मी. के अन्तर पर बनाई गई कतारों में 1 -1.5 से.मी. गहरा डालना चाहिए। यदि बिजाई कन्दों द्वारा की जानी हो तो उन्हें 20 से.मी. के अन्तर पर 25 से.मी. फासले की कतारों में 4 -5 से.मी. गहरा लगाना चाहिए। अनुमोदित की गई उर्वरकों की मात्रा को बीजाई या रोपण से पहले कतारों में समान रूप से बिखेर कर भली प्रकार से मिला लेनी चाहिए। इससे उर्वरकों की क्षमता बढ़ जाती है।

खाद एवं उर्वरकः फसल की अच्छी उपज के लिये खादों एवं उर्वरकों का संतुलित मात्रा में उपयोग अत्यन्त आवश्यक है। 20 टन/हैक्टेयर की दर से गोबर की गली-सड़ी खाद को समान रूप से खेत में मिलाना चाहिए। गोबर की खाद से मिट्टी की संरचना सुधारने के कारण, इसकी जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है। लेकिन फिर भी कुछ पोषक तत्वों की कमी रहती है। इसलिए उर्वरकों को इसके साथ सम्मिलित करना आवश्यक होता है। अच्छी फसल के लिए 60 किलोग्राम नाईट्रोजन, 35 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 30 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टेयर की दर से लाभकारी होता है। एक चौथाई

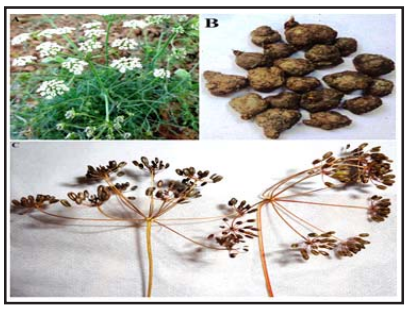

नाईट्रोजन को फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा के साथ बीज या रोपाई से पहले खुली कतारों में भली प्रकार मिलाना चाहिए। नाईट्रोजन की शेष मात्रा को तीन भागों में बांटकर, बर्फ पिघलने पर, अंकुरण के बाद फसल में फूल की पर्याप्त संख्या निकलने पर तथा निराई-गुड़ाई करते समय डालनी चाहिए।

निराई-गुड़ाईः अच्छी फसल के लिए कालाजीरा के खेतों को खरपतवारों से मुक्त रखना बहुत आवश्यक है। पहली निराई-गुड़ाई अंकुरण के एक पखवाड़े के भीतर अवश्य कर लेनी चाहिय। प्रत्येक 20 - 25 दिन के अंतराल पर निराई - गुड़ाई दोहरानी चाहिय। इस प्रकार लगभग कुल 4 या 5 बार की निराई - गुड़ाई फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने में सहायक होती है। इस प्रकार हर निराई - गुड़ाई से पहले यदि वर्षा न हुई हो तो फसल की सिंचाई करना आवश्यक है। फूल निकलते समय और बीज बनने की अवस्था में फसल की अच्छी सिंचाई करने से दाने भरपूर मात्रा में पनपते हैं और पैदावार अच्छी होती है।

फसल की कटाईः कालाजीरा की फसल जून के अन्तिम सप्ताह या जुलाई के पहले पखवाड़े में पक कर तैयार हो जाती है। इसके बीज अधिक पक जाने पर स्वयं ही झड़ने लगते हैं, इसलिए फसल को सही अवस्था में ही काटा जाना चाहिए। फसल को उस समय काट लें जब बीज हल्के भूरे रंग लिए हों। अधपके बीजों में, उड़नशील तेल की मात्रा व सुगन्ध अधिक होती है जिससे बाजार में अच्छा मूल्य मिलता है। बीज के लिए फसल को, जब दानें गहरे और भूरे रंग के हो जाएं, तब काटना चाहिए।

उपजः कालाजीरा की उपज का सीधा सम्बन्ध बीज के तौर पर लगाए गए कन्दों से होता है। 5 ग्राम या इससे अधिक भार वाले कन्दों का प्रयोग करने पर लगभग 3 किवंटल/ हैक्टेयर कालाजीरा प्राप्त किया जा सकता है।

कालाजीरा हिमाचल में सिर्फ किन्नौर, लाहौल स्पीति और चम्बा जिला के चुनिंदा स्थानों पर ही पाया जाता है।

चम्बा जिला में पांगी एवं भरमौर के कुछ हिस्सों में प्राकृतिक तौर पर पाया जाता है। चम्बा जिला में किसानों को इसकी खेती के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र चम्बा द्वारा प्रेरित किया जा रहा है।

शून्य लागत खेती है यम सब्जी का उत्पादन

यम सब्जी की कई किस्में प्रदेश में पायी जाती है। इनमें से दो किस्में प्रदेश के किसान आसानी से खेतों में या घर के आस पास उगा सकते हैं। इन यम प्रजातियों कि खास बात यह है कि जमीन के नीचे उगने वाले कंद और आसमान दोनों में उगने वाले बुलबिल जो कि आसमानी आलू कि भांति प्रतीत होते हैं, दोनों को ही सब्जी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है और इनकी बेल पेड़ या किसी अन्य ढाँचे पर आसानी से फैलती है। ये यम सब्जियाँ अपने स्थानीय नाम तरडोलू और दरेगल से प्रदेश भर में प्रसिद्ध हैं और कई सदियों से सब्जी के रूप में प्रयोग होती आ रही हैं। यम सब्जी की ये दोनों ही किस्में वानस्पतिक परिवार डायोस्कोरासी के जीनस डायोस्कोरिया की सदस्य है।

आसमानी आलूदरेगल

इन जंगली प्रजातियों को नई वाणिज्यिक फसल के रूप में बिना कोई खर्च किए आसानी से विकसित किया जा सकता है। तरड़ी और दरेगल के पौधे तरडोलू तथा दरेगल बुलबिल को जमीन में दबा कर बिना कोई रासायनिक खाद का प्रयोग किए आसानी से उगाया जा सकता हैं। तरड़ी उगाने में एकमात्र समस्या यह है कि इसकी जड़ों की गहराई बहुत अधिक होती है। इस कारण कंद को जमीन से निकालना काफी मुश्किल होता है। इसलिए लोग इसे पुराने कोयले के टार. ड्रम जैसे बड़े बर्तनों में या 40 से 24 सेंटीमीटर गहरे सीमेंट कंक्रीट या कुछ कठोर पदार्थों में तैयार करके आसानी से प्रयोग कर सकते है। इससे जड़ों को नीचे जाने से रोका जा सकता है और कंदों की खुदाई आसानी से हो सकती है। मंडी शहर के आस पास के गाँवों के लोग पहले से ही इस तकनीक को अपनाकर तरड़ी यम को विकसित करने में कामयाब रहे हैं। शिवरात्रि के दिन तरड़ी का सेवन भारी मात्रा में फलाहार के रूप में किया जाता है और यह 150 से 200 रुपये प्रति किलो के हिसाब से बाजार में बिकती है। जबकि दरेगल 200 से 400 रुपये प्रति किलो के हिसाब से बिकता है। इस तरह यम सब्जी का उत्पादन बिना कोई खर्चा किए आमदनी बढ़ाने का एक उतम साधन है। इन यम प्रजातियों के आसमानी आलू (बुलबिल) और भूमिगत कंद दोनों ही औषधीय और पौष्टिक गुणों से भरपूर हैं ।

✍ डॉ. तारा सेन ठाकुर

धान में झुलसा रोग की रोकथाम के लिए समय पर करें दवाइयों का छिड़काव

चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों ने मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में बहुमूल्य जानकारी सुलभ करवाई है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

सब्ज़ी उत्पादन

प्रदेश के निचले पर्वतीय क्षेत्रों में जड़दार सब्ज़ियों जैसे मूली (जपानीज व्हाईट, चाईनीज पिंक), शलजम (पी. टी. डब्ल्यू. जी.), गाजर (नान्तीज, पूसा केसर) की बिजाई पंक्तियों में 25-30 सैं. मी. की दूरी पर करें। पालक की सुधरी प्रजातियां (पूसा हरित, आल ग्रीन, पूसा भारती, बैनर्जी जॉईट) की बिजाई करें। बिजाई के समय 100 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 150 कि. ग्रा. (12:32:16) मिश्रण खाद तथा 8 कि. ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश खाद प्रति हैक्टेयर खेत में डालें ।

मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में फूलगोभी की तैयार पौध को खेतों में 60x45 सैं. मी. की दूरी पर रोपाई करें तथा रोपाई के समय 250 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 250 किलोग्राम (12:32:16) मिश्रण खाद तथा 54 कि. ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश खाद प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। फूलगोभी तथा बन्दगोभी की फसल में निराई-गुड़ाई करें तथा 40-50 किलो ग्राम यूरिया खाद प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। इन्हीं क्षेत्रों में चाईनीज बन्दगोभी की पनीरी दें व मूली, गाजर, शलजम, पालक इत्यादि की सीधी बिजाई भी की जा सकती है।

प्रदेश के ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में खेतों में लगी सब्जियों जैसे फूलगोभी, ब्राकॅली, लैट्यूस तथा लाल बन्दगोभी इत्यादि में निराई-गुड़ाई करें तथा नत्रजन (40-50 कि. ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर) फसलों में डालें।

फसल संरक्षण

धान में झुलसा रोग की रोकथाम के लिये बीम 75 डब्ल्यू.पी. (18 ग्राम/30 लीटर पानी) या बैविस्टिन 50 डब्ल्यू.पी. (1 ग्रा. प्रति ली. पानी) का छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई पड़ने पर करें।

पत्ता लपेट सुण्डी और हिस्पा कीट के नियन्त्रण के लिये क्लोरपाईरिफास 20 ई.सी. (2.5 मि. ली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर 15 दिन के बाद पुनः छिड़काव करें।

मक्की में तना सड़न रोग की रोकथाम के लिये 16.5 कि.ग्रा. ब्लीचिंग पाउडर प्रति हैक्टेयर की दर से रोगग्रस्त पौधों के पास मिट्टी में मिलायें तथा पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध करें। तिल एवं माश में बालों वाली सुण्डियाँ बहुत हानि पहुँचाती है। इनकी रोकथाम के लिए साईपरमिथरित 25 ई.सी. (0.5 मि. ली. प्रति ली. पानी) का कीट की छोटी अवस्था में छिड़काव करें। छिड़काव करते समय स्टीकर का प्रयोग अवश्य करें।

टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च में पत्ता धब्बा एवं फल सड़न रोग की रोकथाम के लिये 2.5 ग्राम रिडोमिल एम जैड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। बैंगन में फल छेदक कीट की रोकथाम के लिए 2 ग्राम कार्बेरिल 50 डब्ल्यू. पी. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। टमाटर तथा बैंगन के खेतों में भी यौन गन्ध ट्रैप (25 प्रति हैक्टेयर) लगायें। तैयार फलों को छिड़काव से पहले ही तोड़ लें और बाकी तुड़ाई 10 दिन बाद करें।

कद्दू प्रजाति के फलों पर फल मक्खी के प्रकोप की रोकथाम के लिए 10 मि.ली. मैलाथियान और 50 ग्रा. गुड़ या चीनी को 5 लीटर पानी में घोल कर बेलों पर छिड़काव करें। इस मिश्रण का छिड़काव खेत के आसपास की झाड़ियों और पौधें पर भी करें ।

फल मक्खी के 25 यौन गन्ध ट्रैप प्रति हैक्टेयर लगाने से नर मक्खियों को कैद किया जा सकता है और प्रकोप से बचा जा सकता है।

पशुधन

पशुओं के ब्याने से दो महीने पहले उनसे दूध लेना बन्द कर दें, परन्तु 2 कि.ग्रा. प्रति दिन की दर से सन्तुलित दाना मिश्रण अवश्य खिलाते रहें। ब्याने के बाद पशु को गुड़ मिश्रित दलिया दिन में दो बार 1.5 कि.ग्रा. की दर से 7-8 दिन तक खिलाते रहें।

नवजात बच्चों की उचित देखभाल करें। जन्म के पश्चात् 1-2 घंटे के भीतर तक उनके भार का 1/10 भाग ताजा खीस अवश्य पिलायें।

किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें। अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) (01894- 230395/ 1800-180-1551) से भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

शत्रु भय से मुक्ति दिलाती-माता बगलामुखी

हिमाचल प्रदेश की पावन धरा पर असंख्य देवी देवताओं के प्राचीन एवं ऐतिहासिक मंदिर विद्यमान है, जिनमें से एक कांगड़ा जिला के राष्ट्रीय उच्च मार्ग पर देहरा-रानीताल सड़क के बनखंडी नामक स्थान पर स्थित है- माता बगलामुखी का प्राचीन एवं भव्य मंदिर। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार दस महाविद्याओं में माता बगलामुखी का आठवां स्थान हैं, जिसकी आराधना शत्रु नाश, वाकसिद्धि और विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए की जाती है। माता बगलामुखी को विश्व में ब्रहास्र के रूप में भी जाना जाता है।

मंदिर प्रबंधन समिति के अध्यक्ष, मंहत देवी गिरि के अनुसार इस मन्दिर की स्थापना द्वापर युग में पाण्डवों द्वारा अज्ञातवास के दौरान एक रात में की गई थी जिसमें सर्वप्रथम अर्जुन एवं भीम द्वारा युद्ध में शक्ति प्राप्त करने तथा माता बगलामुखी की कृपा प्राप्त करने के लिए विशेष पूजा की गई थी और कालांतर से ही यह मंदिर लोगों की आस्था व श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है तथा वर्ष भर असंख्य श्रद्धालु जो श्री ज्वालामुखी, माता चिन्तपुर्णी, नगरकोट इत्यादि के दर्शन के लिए आते हैं, वह सभी श्रद्धालु इस मंदिर में भी आकर माता का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर के साथ प्राचीन शिवालय में आदमकद शिवलिंग स्थापित है जहां पर लोग माता के दर्शन के उपरांत शिवलिंग पर अभिषेक करते हैं।

बगलामुखी साधक पंडित दिनेश रतन ने बताया कि माता बगलामुखी का दस महाविद्याओं में 8वां स्थान है तथा इस देवी की आराधना विशेषकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये की जाती है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार माता बगलामुखी की आराधना सर्वप्रथम ब्रह्मा एवं विष्णु भगवान ने की थी। इसके उपरान्त भगवान परशुराम ने माता बगलामुखी की आराधना करके अनेक युद्धों में शत्रुओं को परास्त करके विजय पाई थी।

द्रोणाचार्य, रावण, मेघनाथ इत्यादि सभी महायोद्धाओं द्वारा माता बगलामुखी की आराधना करके अनेक युद्ध लड़े गये। नगरकोट के महाराजा संसार चन्द कटोच भी प्रायः इस

बी.आर चौहान

मन्दिर में आकर माता बगलामुखी की आराधना किया करते थे, जिसके आशीर्वाद से उन्होंने कई युद्धों में विजय पाई थी और तभी से इस मन्दिर में श्रद्धालुओं का अपने कष्टों के निवारण के लिये निरन्तर आना आरम्भ हुआ और श्रद्धालु नव ग्रह शांति, ऋद्धि- सिद्धि प्राप्ति सर्व कष्टों के निवारण के लिए मंदिर में हवन-पाठ करवाते हैं।

माता के प्रादुर्भाव की कथा का वर्णन करते हुए पंडित दिनेश रतन ने बताया कि सतयुग में इस चराचर संपूर्ण जगत को नष्ट करने वाला भयानक वातक्षोभ अर्थात तीव्र तूफान आया जिससे पूरी सृष्टि के समाप्त होने का खतरा पैदा हो गया और चारों ओर हाहाकार मच गया। संपूर्ण जगत को संकट में आया देख, जगत के पालनकर्ता भगवान विष्णु बहुत चिंतित हो गए और उन्होंने सौराष्ट्र प्रांत के हरिद्रा सरोवर के पास श्री विद्या महात्रिपुर सुंदरी को प्रसन्न करने हेतु कठोर तप किया और भगवान विष्णु के तप से प्रसन्न होकर देवी आद्या शक्ति बगलामुखी रूप में प्रकट हो गई तथा तप करने का कारण पूछा। भगवान विष्णु के आग्रह पर माता बगलामुखी ने अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए तूफान को स्तंभित करके संपूर्ण जगत की रक्षा की। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार चतुर्दशी की वीर रात्रि की अर्धरात्रि में माता बगलामुखी अवतरित हुई। पीत वस्त्र को धारण किए माता को पीतांबरा भी कहा जाता है।

माता बगलामुखी के सम्पूर्ण भारत में केवल दो सिद्ध शक्तिपीठ विद्यमान हैं, जिसमें एक मंदिर मध्य प्रदेश के दतिया में तथा दूसरा हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के बनखंडी में स्थित है। यहां पर लोग अपने कष्टों के निवारण के लिये हवन एवं पूजा करवाते हैं और लोगों का अटूट विश्वास है कि माता अपने दरबार से किसी को निराश नहीं भेजती। केवल सच्ची श्रद्धा एवं सद्विचार की आवश्यकता है।

माता बगलामुखी जयंती के लिए मंदिर प्रबंधन समिति द्वारा श्रद्धालुओं के लिए व्यापक सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं। लंगर के अतिरिक्त मंदिर परिसर में पेयजल, शौचालय, ठहरने की व्यवस्था तथा हवन इत्यादि करवाने का विशेष प्रबंध किया गया है। यहां पर देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु माता के मंदिर में आकर हवन करवाकर विपति से छुटकारा पाते हैं, जिसमें कोई संशय नहीं।

हिमाचल का सोना सेब

हिमाचल की देश में फलोत्पादक राज्य के रूप में पहचान है। आम, संतरा, अंगूर, लीची, किन्नू, अमरूद, मालटा, खुमानी यहां के प्रमुख फल हैं। लेकिन हिमाचल को ख्याति सेब के कारण मिली है। इसे भारत का सेब राज्य भी कहा जाता है। राज्य में

सेब की खेती 3,500 से लेकर 9,000 फुट तक की ऊंचाई में होती है। मुख्यतः शिमला, कुल्लू, मण्डी, सिरमौर, किन्नौर व चम्बा जिलों में होती है। प्रदेश के सेब उत्पादन की यह विशेषता है कि यहां पर डिलिशियस प्रजाति के सेब व्यावसायिक स्तर पर लगाए गए।

राज्य में शुरू से ही सेब की रेड डिलिशियस, रॉयल डिलिशियस, रिच-ए-रेड आदि प्रजातियां बड़ी लोकप्रिय रही हैं। ये जातियां देखने में सुन्दर व खाने में स्वादिष्ट हैं, पर अधिक नाजुक होने के कारण गोदामों में भंडार करने योग्य न थीं। इन्हें कुछ विशेष क्षेत्रों में ही पैदा किया जा सकता है। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह तय किया गया कि सेब की ऐसी जातियां विकसित की जाएं जो अधिक पैदावार देने वाली और प्रदेश के सेब उत्पादन वाले सभी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त, कीड़ों, बीमारियों की भी रोधक हों। इस उद्देश्य से प्रदेश फल अनुसंधान केन्द्र, मशोबरा तथा कोटखाई में विभिन्न देशों से लगभग सेब की 400 जातियां लाकर अनुसंधान कार्य शुरू किया गया। इसके परिणामस्वरूप प्रदेश में सेब की टाइटमैन सरसेस्टर, रेड डिलिशियस, रॉयल डिलिशियस, रिच-ए-रेड, रेड गोल्ड, स्टारकरिमसन डिलिशियस, गोल्डन डिलिशियस, मौंकिटास, लाडैलैंबोन, एलिंगटन, पिपिन और ग्रेनी स्मिथ प्रजातियां उपयोगी पाई गईं। अनुमानतः हिमाचल में 15 लाख टन सेब का उत्पादन होता है। देश में पैदा होने वाले सेब का 40 प्रतिशत भाग हिमाचल प्रदेश में पैदा होता है। लगभग 40 हजार सेब उत्पादक इस व्यवसाय से जुड़े हैं। हजारों अकुशल श्रमिकों की रोजी-रोटी सेब से जुड़ी है।

हिमाचल में सेब उत्पादन का श्रेय सत्यानन्द स्टोक्स को जाता है। इनका वास्तविक नाम सैमुअल एवांस स्टोक्स था। इन्होंने बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शिमला के कोटगढ़ व कोटखाई क्षेत्रों में सेब के पौधे लगाकर स्थानीय लोगों की इस फल में रूचि पैदा की। सत्यानन्द स्टोक्स को सेब क्रांति का अग्रदूत माना जाता है। सेब में अनेक गुण हैं इनमें 0.1 प्रतिशत प्रोटीन, 0.1 प्रतिशत कैल्शियम, 0.1 प्रतिशत चूना, 0.02 प्रतिशत फास्फेट तथा 1.6 प्रतिशत लोहा होता है। इसके अतिरिक्त सेब में शर्करा, पोटाशियम, सोडियम, मैग्नीशियम, सल्फर, कैरोटीन, थायमीन, राइबोफ्लोविन और विटामिन-सी भी पाया जाता है। इस फल के सेवन से पेट साफ रहता है। प्रतिदिन एक सेब खाने से कब्ज की बीमारी से छुटकारा मिलता है। सेब को छिलका सहित खाने से विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में मिलती है। मसूढ़ों के लिए सेब लाभदायक होता है। सेब शारीरिक दुर्बलता में अत्यन्त लाभदायक है। फास्फोरस व लौह तत्व मुख्य होने से यह मांसपेशियों में शक्ति का संचार कर उन्हें सुदृढ़ बनाता है। यह अनिद्रा रोग में रामबाण है।

-अशोक सरीन

अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय के प्रबल समर्थक
स्वामी विवेकानन्द

भारत के महानतम समाज सुधारक, विचारक और दार्शनिक स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में हुआ था। वह अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय एवं आर्थिक समृद्धि के प्रबल समर्थक थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'लोकतंत्र में पूजा जनता की होनी चाहिए। क्योंकि दुनिया में जितने भी पशु-पक्षी तथा मानव हैं वे सभी परमात्मा के अंश हैं।' स्वामी जी ने युवाओं को जीवन की उच्चतम सफलता का अचूक मंत्र इस विचार के रूप में दिया था- 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।'

स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के एक सफल वकील थे और मां श्रीमती भुवनेश्वरी देवी एक शिक्षित महिला थी। अध्यात्म एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के नरेन्द्र के मस्तिष्क में ईश्वर के सत्य को जानने के लिए खोज शुरू हो गयी। इसी दौरान नरेंद्र को

प्रदीप कुमार सिंह

दक्षिणेश्वर काली मंदिर के पुजारी रामकृष्ण परमहंस के बारे में पता चला। वह विद्वान नहीं थे, लेकिन वह एक महान भक्त थे। नरेंद्र ने उन्हें अपने गुरू के रूप में स्वीकार कर लिया। रामकृष्ण परमहंस और उनकी पत्नी मां शारदा दोनों ही जितने सांसारिक थे, उतने आध्यात्मिक भी थे। नरेन्द्र मां शारदा को बहुत सम्मान देते थे। रामकृष्ण परमहंस का 1886 में बीमारी के कारण देहांत हो गया। उन्होंने मृत्यु के पूर्व नरेंद्र को अपने उत्तराधिकारी के रूप में नामित कर दिया था। नरेंद्र और रामकृष्ण परमहंस के शिष्यों ने संन्यासी बनकर मानव सेवा के लिए प्रतिज्ञाएं लीं।

1890 में नरेंद्रनाथ ने देश के सभी भागों की जनजागरण यात्रा की। इस यात्रा के दौरान बचपन से ही अच्छी और बुरी चीजों में विभेद करने के स्वभाव के कारण उन्हें स्वामी विवेकानंद का नाम मिला। विवेकानंद अपनी यात्रा के दौरान राजा के महल में रहे, तो गरीब की झोंपड़ी में भी। वह भारत के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों और लोगों के विभिन्न वर्गो के संपर्क में आये। उन्होंने देखा कि भारतीय समाज में बहुत असंतुलन है और जाति के नाम पर बहुत अत्याचार हैं। भारत सहित विश्व को धार्मिक अज्ञानता, गरीबी तथा अंधविश्वास से मुक्ति दिलाने के संकल्प के साथ 1893 में स्वामी विवेकानंद शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका गए। 'स्वामी विवेकानंद ने 11 सितम्बर 1893 में अमेरिका के शिकागो की विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक तथा सार्वभौमिक सत्य का बोध कराने वाला भाषण दिया था। इस भाषण का सार यह था कि धर्म एक है, ईश्वर एक है तथा मानव जाति एक है।

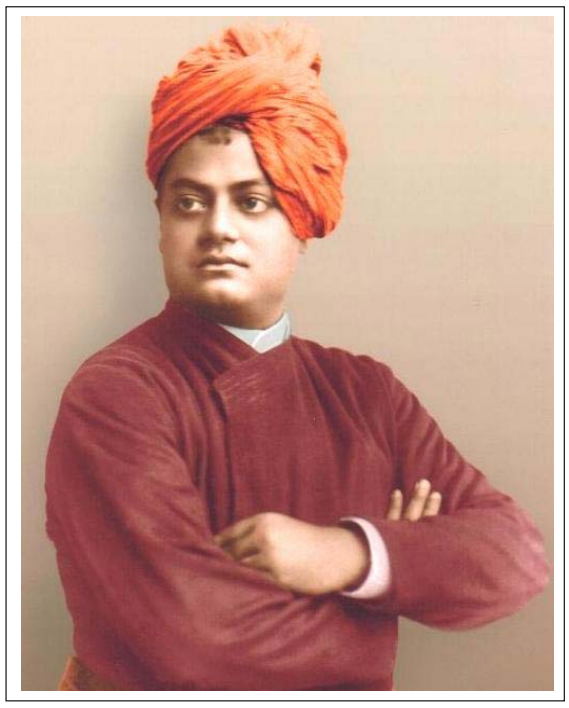

स्वामी विवेकानंद अपनी विदेश की जनजागरण यात्रा के दौरान इंग्लैंड भी गए। स्वामी विवेकानंद इंग्लैंड की अपनी प्रमुख शिष्या, जिसे उन्होंने नाम दिया था भगिनी (बहन) निवेदिता। विवेकानंद सिस्टर निवेदिता को महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए भारत लेकर आए थे।

स्वामी जी ने अनुभव किया कि समाज सेवा केवल संगठित अभियान और ठोस प्रयासों द्वारा ही संभव है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्वामी विवेकानंद ने 1897 में रामकृष्ण मिशन की शुरूआत की और अध्यात्म, वैज्ञानिक जागरूकता एवं आर्थिक समृद्धि के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अपने युगानुकूल विचारों का प्रसार लोगों में किया। अगले दो वर्षो में उन्होंने बेलूर में गंगा के किनारे रामकृष्ण मठ की स्थापना की। उन्होंने भारतीय संस्कृति की अलख जगाने के लिए एक बार फिर जनवरी, 1899 से दिसंबर, 1900 तक पश्चिम देशों की यात्रा की। स्वामी विवेकानंद का देहान्त 4 जुलाई, 1902 को कलकत्ता के पास बेलूर मठ में हो गया। स्वामी जी देह रूप में हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके अध्यात्म, वैज्ञानिक जागरूकता एवं आर्थिक समृद्धि के विचार युगों- युगों तक मानव जाति का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

स्वामी जी ने अमेरिका भ्रमण में पाया कि बिजली के आगमन से अमेरिकियों के जीवन स्तर में आधुनिक बदलाव आया है। स्वामी जी ने अपने छोटे भाई महेन्द्रनाथ दत्त को संन्यास की दीक्षा नहीं दी तथा विद्युत शक्ति का अध्ययन करने के लिए उन्हें तैयार किया। उन्होंने कहा कि देश को विद्युत इंजीनियरों की ज्यादा आवश्यकता है अपेक्षाकृत संन्यासियों के।

स्वामी जी का स्पष्ट मत था कि विज्ञान के अद्भुत विकास के साथ धर्म की सोच में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। स्वामी जी पूरे समाज को एक स्तर पर लाना चाहते थे और यही उनका समाजवाद था। उनका समाजवाद कार्ल मार्क्स की पुस्तकों पर नहीं वरन् वेदान्त पर आधारित था। विवेकानंद के अनुसार वेदान्त में विशेषाधिकार आधारित व्यवस्था का विरोध किया गया है। विवेकानंद का मानना था कि औद्योगिक विस्तार के साथ व्यापारिक विस्तार भी आवश्यक है। स्वामी जी ने उन भारतीयों को प्रोत्साहित किया जो निजी तौर पर विदेशों से व्यापार के लिए आगे बढ़ रहे थे।

स्वामी जी ने उत्पादन व्यवस्था में श्रम के मूल्य का भी महत्व बतलाया। उनके अनुसार संसार के सभी संसाधनों में मानव संसाधन सबसे ज्यादा मूल्यवान है। उनके अनुसार एक व्यक्ति का अधिक शक्तिशाली होना, कमजोर व्यक्तियों के शोषण का कारण बनता है। दूरदर्शी विवेकानंद ने भांप लिया था कि आने वाले समय में अकुशल तथा अर्धकुशल श्रमिकों की मांग कम होती चली जायेगी। दूसरी ओर कुशल मजदूरों की मांग तेजी से बढ़ेगी। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने भारतीय मजदूरों की तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया।

स्वामी विवेकानन्द के मार्गदर्शन व आशीर्वाद तथा जमशेदजी टाटा जैसे दूरद्रष्टा की कोशिशों से सन् 1909 ई. में भारतीय विज्ञान संस्थान-बंगलोर की स्थापना हो सकी। भारतीय विज्ञान संस्थान दो महान् व्यक्तियों की दूरदृष्टि (प्रकाराान्तर से विज्ञान व अध्यात्म के सम्मिलित प्रयत्न से) से स्थापित हो सका। यह भौतिकी, एयरोस्पेस, प्रौद्योगिकी, ज्ञान आधारित उत्पाद, जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी का एक विश्वस्तरीय संस्थान है। 21वीं सदी का उज्जवल भविष्य अध्यात्म एवं विज्ञान के मिलन में निर्भर है।

विज्ञान की कोशिश है कि लोगों का भौतिक जीवन बेहतर हो, जबकि अध्यात्म का प्रयास है कि प्रार्थना आदि उपायों से इन्सान सच्ची राह चले। विज्ञान और अध्यात्म के मिलन से तेजस्वी नागरिक का निर्माण होता है। तर्क और युक्ति विज्ञान व अध्यात्म के मूल तत्त्व हैं। धार्मिक व्यक्ति का लक्ष्य आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करना है, जबकि वैज्ञानिक का मकसद कोई महान खोज या अविष्कार करना होता है। यदि जीवन के ये दो पहलू आपस में मिल जाएं तो हम चिन्तन के उस शिखर पर पहुंच जाएंगे जहां उद्देश्य एवं कर्म एक हो जाते हैं। इस आधार पर उच्चतम विकसित समाज का निर्माण साकार होगा।

अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय एवं आर्थिक समृद्धि के प्रबल समर्थक विवेकानंद जी केवल भारत के ही गुरू नहीं वरन् वह जगत गुरू के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करने की उपयुक्त योग्यता रखते थे उन्होंने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस से विभिन्न धर्मों के सारभौमिक सत्य को आत्मसात किया था। नवयुग का नवीन दर्शन और नवीन विज्ञान है-वैज्ञानिक अध्यात्म। स्वामी जी का मानना था कि अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय के विचारों में विश्व की सभी समस्याओं के समाधान निहित हैं।

पहाड़ी संस्कृति और पहनावे की परिचायक हिमाचली टोपी

यूं तो ताज राजा- महाराजा ही पहना करते थे, लेकिन हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में हर शख्स खुद राजा है और राजा की तरह ही ताज पहनता है। फर्क सिर्फ इतना है कि यह ताज हीरे-मोतियों से जड़ा नहीं होता बल्कि नरम मुलायम ऊन, पशम और मखमल से बना होता है। यह है हिमाचली परिधान का अभिन्न अंग टोपी। पहाड़ियों के सिर का ताज यह टोपी न केवल सर्दियों से बचाती है बल्कि अपनी अनूठी संस्कृति और पहनावे की परिचायक भी है।

हिमाचल प्रदेश में मुख्य रूप से तीन तरह की टोपियां प्रचलन में हैं। इनमें किन्नौरी, बुशहरी व कुल्लुवी टोपी शामिल हैं। इनमे सबसे प्रचलित किन्नौरी टोपी है। किन्नौरी व बुशहरी टोपी में मुख्यतः तीन अंतर हैं। पहला, किन्नौरी टोपी में मखमल की पट्टी चौड़ी होती है जबकि बुशहरी टोपी में कम चौड़ी। दूसरा, टोपी के किनारे किन्नौरी के तीखे तो बुशहरी के गोल होते हैं। तीसरा, टोपी के मखमल के साथ लगने वाली मगज की पट्टी जो किन्नौरी में तीन पट्टियां तो बुशहरी में दो पट्टियां होती है। ये अंतर इतना कम होता है कि केवल जानकार ही पहचान सकते हैं जबकि दोनों ही एक समान नजर आती हैं। इस टोपी की खासियत यह है की इसे किन्नौर में पुरुष और महिलायें दोनों पहनते हैं। इसके अलावा कुल्लुवी, भरमौरी, सिरमौरी, लाहुली, नेहरू, चम्बायाली और ठियोगी आदि टोपियां कई तरह के अलग अलग रंगों व डिजाइनों में पूरे हिमाचल में प्रचलित हैं।

हिमाचली टोपी के नाम से जानी जाने वाली ये टोपी हिमाचल प्रदेश की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा होने के साथ स्थानीय लोगों का रोजगार भी है। हिमाचली टोपी मान-सम्मान के आदान-प्रदान का एक जरिया है। प्रदेश के अब तो हर जिले में पहाड़ी टोपियां पहने आपको काफी लोग मिल जाएंगे। हिमाचल में हिमाचली टोपी की अपनी ही महत्ता है। किन्नौर के मंदिरों में प्रवेश के लिए सिर पर टोपी होना जरूरी है। यदि किसी आगंतुक को जानकारी न हो तो स्थानीय निवासी और पुजारी टोपी का इंतजाम कर देते हैं। हिमाचल कि शान टोपी न केवल प्रदेश में ही बलिक विदेशों में भी अपनी पहचान बनाए हुए है। ये वजह है कि देश व विदेशों से आने वाले पर्यटक यहां की टोपी में फोटो खिंचवाना और यहां की टोपी खरीदना कभी नहीं भूलते। हाल के वर्षों में, हिमाचली टोपी एक ब्रांड के रूप में विकसित हुई है। यह हिमाचल के बाहर के लोगों के साथ भी एक फैशन ट्रेंड बन रहा है। इस पारंपरिक मास्टर पीस को भारत में युवाओं के बीच लोकप्रियता हासिल करना अच्छा लगता है। लगता है कि ये रुझान लोगों को विभिन्न संस्कृतियों से एकीकृत करने में मदद करते हैं और अधिक समावेशी बनाते हैं। इन दिनों भारत के कई हिस्सों और विदेशों से कई मशहूर हस्तियों, राजनेताओं, मॉडलों और लोगों को इस हिमाचली टोपी को पहने हुए देखा गया है।

निशा सहगल

फैशन कुछ समय बाद बदल जाता है और पुरानी चीजों को ही नए रूप में पेश किया जाता है। अगर पारंपरिक वेशभूषा को फैशन में लाया जाए तो पहनने वाले और देखने वाले को अलग अहसास होता है। ऐसा ही हिमाचली टोपी के साथ हो रहा है। आजकल युवाओं को ये खूब भा रही है। कुछ समय पहले जहां नेता और बुजुर्ग ही हिमाचली टोपी पहने नजर आते थे, अब शिमला के माल रोड पर अधिकतर युवा हिमाचल टोपी पहने घूमते हैं।

सर्दियों में युवा कोई नये डिजाइन की टोपी नहीं खरीदते बल्कि हिमाचली टोपी की खरीदारी करते हैं। बड़े शोरूम तथा सड़क पर स्टॉल लगाने वालों के पास हर दूसरा व्यक्ति हिमाचली टोपी पसंद करते दिखाई देता है। बाजार में कई डिजाइन व रंगों में टोपियां उपलब्ध हैं। हिमाचली टोपी की कीमत 100 से हजारों रुपये तक में है। युवा जहां पहले कैप व ऊनी टोपी पहनना पसंद करते थे। वहीं, अब नेहरू कोट के साथ पहाड़ी टोपी का मिलान कर एक नए फैशन को इजाद कर रहे हैं।

शहर में युवा जींस व नेहरू कोट संग हिमाचली टोपी पहने घूमते नजर आते हैं। युवाओं का कहना है कि नेहरू कोट उन्हें जहां ठंड से बचाएगा, वहीं कोट संग हिमाचली टोपी फैशनेबल बनाएगी। इनका कहना है कि हिमाचली टोपी प्रदेश की पहचान है, संस्कृति है। इसको अपनाना और फैशन में लाना संस्कृति का संरक्षण है।

अंजान मनु मंज सो पहचान बनान्दा हेरा पुर जेडा इस टोपी जो लांदा। तेजो न भुन्दी बाकफिता री लोड सो देशा, विदेशा मा हिमाचली कहलंदा।

दिव्यांगता को मात दे रजत ने पास की नीट परीक्षा

कहते हैं कि मन में कुछ कर गुजरने की सच्ची लगन हो और इरादे मजबूत हो तो कोई बाधा, लक्ष्य को भेदने में रुकावट नहीं बन सकती। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है आनी के होनहार छात्र रजत ने। उसने दोनों हाथ न होते हुए भी अपनी दिव्यांगता को मात देकर नीट की कठिन परीक्षा को उत्तीर्ण करने में सफलता हासिल की है। रजत कुमार अब बिना हाथों के ही लाल बहादुर शास्त्री मेडिकल कॉलेज नेरचौक से डॉक्टरी की पढ़ाई करेगा। रजत की उपलब्धि से उसके माता पिता व भाई खुशी से फुले नहीं समा रहे हैं। बता दें कि रजत कुमार ने आनी स्थित हिमालयन मॉडल स्कूल से +2 की पढ़ाई पूर्ण की है। राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (नीट) 2019 में 150 अंक हासिल कर अपने मजबूत इरादे जाहिर कर दिए। रजत ने शारीरिक विकलांग के स्टेट कोटे में 14वां रैंक हासिल किया है।

स्कूल में भी अवव्ल रहा है रजत-उसने मुंह से पेन चलाकर ही हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड धर्मशाला द्वारा ली गयी बारहवीं कि वार्षिक परीक्षा में विज्ञान संकाय में 500 में से 404 अंक यानी कि 80.80 फीसदी अंक हासिल किए थे और इससे पहले दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में भी मुंह से लिखकर 700 में से 613 यानी कि 87.57 फीसदी अंक हासिल किए। बहुआयामी प्रतिभा के धनी रजत मुंह से पेंट ब्रश पकड़कर बेहतरीन चित्रकारी भी करता है जिसे देखकर बड़े से बड़ा कलाकार भी दंग रह जाता है। स्कूल की पेंटिंग के हर कंपीटिशन रजत ने ही जीते है। इसके अलावा वह फुटबॉल का भी अच्छा खिलाड़ी है।

छबिन्द्र शर्मा

बिना किसी की मदद के देता है परीक्षा- रजत को पढ़ाई लिखाई करने में किसी की मदद की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वह पढ़ने लिखने सहित घर के सारे काम पांव व मुंह के सहारे करता है। उसे इसके लिए किसी की भी मदद की आवश्यकता नहीं रहती ।

बचपन के हादसे ने दिये जिन्दगी भर के जख्म-कुल्लू जिला के आनी निवासी सेवानिवृत्त शारीरिक शिक्षक जय राम व माता दिनेश कुमारी के अनुसार रजत जब चौथी कक्षा में पढ़ता था तो, अपने पैतृक गांव रडू में घर के आंगन में खेलते समय अचानक वह घर की छत से गुजरती विद्युत की एचटी लाइन की चपेट में आ गया, जिससे उसके दोनों हाथ बेकार हो गए और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए डॉक्टर को उसके दोनों हाथ काटने पड़े। इस हादसे ने रजत व उसके मां-बाप को उम्र भर के लिए गहरे जख्म दे डाले, पर रजत ने हिम्मत नहीं हारी और अपनी पढ़ाई को जारी रखा व सभी कक्षाएं अव्वल नम्बरों में उत्तीर्ण की और हाल ही में नीट की कठिन परीक्षा को भी उत्तीर्ण कर अपनी शारीरिक विकलांगता को करारी मात दी है। रजत का यह जुनून दूसरों के लिए एक प्रेरणा है। प्रदेशवासियों को ऐसी होनहार व विलक्षण प्रतिभा पर नाज है।

अद्भुत सौंदर्य से युक्त पराशर झील

ऋषि पराशर की कर्मभूमि, अध्यात्म की दृष्टि से अप्रतिम पराशर झील निःसन्देह चिन्तन, मनन करने वाले मनीषियों के लिए अद्भुत सौन्दर्य से युक्त है।

पराशृणाति पापानीति पराशरः अर्थात्-जो दर्शन, स्मरण करने से ही समस्त पापों का नाश करें वही पराशर हैं। मुनि वसिष्ठ जी के पौत्र पराशर ऋषि जी साक्षात् विष्णु जी के अवतार हैं। मन्त्र द्रष्टा पराशर ऋषि ब्रह्म ज्ञानी और स्मृतिकार हैं। उनकी पावन पुनीत तैर रहे टापुओं से भरी झील व आलय

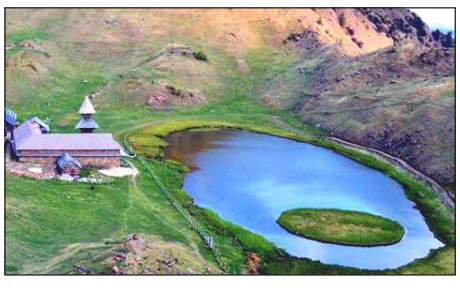

को देखने का सौभाग्य मिला और ऐसा प्रतीत हुआ मानो हमें देवलोक ही प्राप्त हो गया हो। ईश्वर की अपार अनुकम्पा ही कहना चाहिए जो देवभूमि के दर्शन का लाभ मिला।

आज भी महर्षि पराशर जी की उपस्थिति तीव्र व शक्तिशाली है जिसका आभास भक्तों के साथ हमें भी हुआ। अलौकिक तेज की साक्षात मूर्ति, पराशर ऋषि, की तपोस्थली में असंख्य यात्री बिना किसी भय के आत्मिक शांति हेतु आते हैं। यह ऐसी यात्रा है जो अहम् तत्व से परम तत्व की ओर लेकर जाती है। अविस्मरणीय अनुभव हर आगन्तुक को यहां आने पर मिलता है। महर्षि वेदव्यास जी के पिता हिमाचल प्रदेश के ऊपर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें।

स्वच्छता का ज्वलंत उदाहरण यहां देखने को मिला। हर व्यक्ति कूड़ा उठा कूड़ेदान में डाल रहा था। यही सामूहिक प्रयास हिमाचल का नाम ऊंचा करेगा। बहुत हर्ष हुआ कि किसी भी सामान को दुगुने दाम में कोई नहीं बेच रहा था। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। शायद देवतत्व का ही असर है कि कोई लालच नहीं। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मेरे बेटे और भतीजे ने मालाएं एक दुकानदार से खरीदीं और मुझे कहा पैसे दो इन्हें। मैं उस दुकानदार के पास गई जो शान्ति से बैठा हुआ था। मैंने कहा, भाई पहले रुपये लो फिर सामान दो। कोई बिना दिए ही चला गया तो? मुस्कुराहट बिखेरता वह बोला, के फरक पेई जाणा देउ ब्हौत देयां। बच्चे ले जावो किच्छ नीं...और वह हाथ में ली माला के मनके फेरने लग पड़ा। अद्भुत उत्तर से और उसके व्यवहार से हमने जाना कि अध्यात्मिक मनुष्य किस तरह ऊपर उठ जाता है। हमने माथा टेका। झील के बीच तैरते टापू को काफी समय बैठ चुपचाप निहारा। खाने योग्य जो भी लेकर गए थे बांटकर खाया और पराशर ऋषि को प्रणाम कर पुनः घर की ओर आ गए। हिमाचल को प्रकृति माता ने दिल खोलकर दिया है हम सबको इस धरोहर का सरंक्षण करना चाहिए। प्रकृति मां के सदैव आभारी रहना चाहिए।

-प्रतिभा शर्मा

आधुनिकता के दौर में सांचा विद्या का महत्व

आधुनिकता के इस दौर में भी सांचा विद्या व पाबूची लिपि की 350 पांडूलीपियों का अध्ययन कर आज भी याचक को फलादेश बताया जाता हैं। पाबूची विद्या ज्योतिष के माध्यम से किसी जातक के भविष्य निर्माण व कुंडली निर्माण संबंधि फलादेश व नक्षत्रों को अध्ययन करने की विद्या है। इनमें जन्म के समय स्थान व अंक्षाश निकाले जाते हैं। उसके बाद विशोतरी महादशा व योगनी महादशा निकाली जाती हैं। इसके बाद नवांश चक्र का निर्माण होता है।

इन सब का निर्माण करने के बाद एक किताब या जिसे सांचा कहते हैं उसके द्वारा फलादेश बताया जाता है। यह शेर के दांत अथवा बारहसिंगा के सींग से निर्मित होता है। यह चार कोनों वाला होता है। चारों कोनों पर अलग-अलग संख्याओं में अंक खुदे होते हैं।

इस किताब या सांचा को मृगशाला के उपर रखा जाता है। जिससे फलादेश की गणना की जाती है। प्रश्न पूछने के लिए अलग ढंग प्रयोग किया जाता है। लकड़ी की बेदी पर मंदिर की मिट्टी डाली जाती है। उस पर सांचे का आकर कुरेदते हैं जिससे धरेवट विधि से ज्योतिष गणना की जाती है।

इससे देव दोष, पितृ दोष, तांत्रिक गतिविधियों के बारे में पता लगाकर उनका सात्विक विधि से उपाय बताए जाते हैं।

सिरमौर जिला के शिलाई विकास खंड की शखोली पंचायत के खडकांह गांव में पाबूच ब्राह्मणों के 60 परिवार आज भी सांचा विद्या व पाबूची लिपी की 350 पांडूलीपियों का अध्ययन कर लोगों को फलादेश बताते हैं।

इस गांव के ब्राह्मणों की खासियत यह है कि यहां का कोई भी व्यक्ति मांसाहारी भोजन का सेवन नहीं करता। शराब पीना भी मना है व गांव में नशे की सभी वस्तुएं निषेध हैं। बाहर से भी कोई व्यक्ति गांव में इन आसाध्य वस्तुओं को लेकर प्रवेश नहीं कर सकता। यहां तक की सिगरेट व तंबाकू का प्रयोग करना भी मना है। माना जाता है कि इस गांव के सभी ब्राह्मण पंथ ऋषि की औलाद हैं। ये विष्णु के उपासक हैं। ग्राम देवता के रूप में लोग महासू देवता की पूजा करते हैं। खडकांह गांव में संवत 1157 में राजस्थान के जैसलमेर से यह पाबूच पंडित सिरमौर के महाराजा स्वर्गीय ढाकेंद्र प्रकाश के जन्म पर यह लोग रानी के साथ आए थे। सिरमौर रियासत के राजा ने इन ब्राह्मणों को दूर-दराज के क्षेत्र खडकांह में बसाया।

गोपाल दत्त शर्मा

इसका कारण यह था कि यह लोग शांति प्रिय व एकांत में रहकर ज्योतिष विद्या का अध्ययन व फलादेश संहिता का निर्माण पहाड़ी भाषा में करना चाहते थे। इसके लिए राजा ने रियासत के कुछ काबिल विद्वानों को उनके साथ भेजा। पीढ़ी दर पीढ़ी यह ज्योतिष के ग्रंथों की रचना करते गए। इन्होंने पाबूची शैली में लगभग 400 ज्योतिष व प्रश्नावली संबंधि ग्रंथ तैयार किए। जिनमें से आज 350 के करीब पांडुलीपियां इन लोगों के पास सुरक्षित हैं। इस विद्या से फलादेश जानने, जन्म पत्री निर्माण, तांत्रिक गतिविधियों व अन्य क्रियाक्लापों को जानने के लिए पूरे उत्तर भारत से लोग इन ब्राह्मणों के पास अपना भविष्य फल जानने के लिए आते हैं। इनमें उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली व मध्यप्रदेश के लोग अधिक संख्या में आते हैं। यहां तक की कई बार पुलिस भी चोरी की बड़ी-बड़ी घटनाओं को सुलझाने के लिए पाबूची विद्या का सहारा लेते हैं।

इसके अलावा बड़े-बड़े व्यापारी व उद्योगपति भी पाबूच विद्या के माध्यम से अपना भविष्य पूछने इनकी शरण में आते हैं। इनकी खासियत यह है कि चाहे कोई कितना ही बड़ा धनवान हो। या गरीब सभी को मात्र सवा पांच रुपये सांचें में रखने होते हैं। यही मात्र इन लोगों की दक्षणा होती है अपनी श्रद्धा से कोई कुछ दे जाए वह अलग बात है।

खडकांह के निवासी विष्णु के उपासक होने के चलते शुद्ध शाकाहारी हैं। गांव का कोई भी व्यक्ति बाहर भोजन नहीं करता। यहां तक की इस गांव के लोग अगर कहीं बाहर जाते है तो वह स्वयं अपना भोजन बनाते हैं। किसी के हाथ का बना हुआ भोजन नहीं खाते। किसी होटल या रेस्तरां में खाना खाना भी निषेध है। वीरवार के दिन सभी लोग मीठा भोजन ही करते हैं। इस दिन नमक खाना निषेध है। इनकी शादी-विवाह में भी मांसाहारी भोजन नहीं बनता।

राजगढ में रहने वाले मोहन लाल पाबूच का कहना है कि उनकी पाबूची विद्या को संरक्षित करने के लिए सरकार गंभीर प्रयास नहीं कर रही है। हालांकि भाषा एवं संस्कृति विभाग ने कई बार कार्यशाला लगाकर इसकी जानकारी देने की कोशिश की है। मगर सीमित वित्तीय साधन होने के कारण इस विद्या को प्रोत्साहन नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने बताया कि यदि इस विद्या को संरक्षित किया जाए तो ज्योतिष व संस्कृत के विद्वानों के लिए यह बहुत सहायक सिद्ध होगा।

कहानी

आखिरी जवाब

'कहीं नहीं जाएगी काकी' , पार्वती बुआ की कड़कती आवाज ने सब को चुप करवा दिया। काकी की अटैची फिर हवेली के अन्दर रख दी गई।

यह तीसरी बार की बात थी। काकी के कुनबे ने फैसला किया था कि विवाहित लड़की का असली घर उसका ससुराल ही होता है। न चाहते हुए भी काकी मायका छोड़कर ससुराल जा रही थी हालांकि ससुराल से उसे लिवाने कोई नहीं आया था। काकी को बोझ समझकर उसके परिवार वाले उसे खुद ही उसके ससुराल फैंकने की स्वीकृति दे चुके थे कि पार्वती बुआ को अपनी बर्बाद हो चुकी जवानी याद आ गई। खुद उसके साथ कुनबेवाले ने कोई इन्साफ नहीं किया था और उसे कई बार उसकी मर्जी के खिलाफ उसे ससुराल भेजा जहां उसकी कोई कद्र नहीं थी।

तभी तो पार्वती बुआ टब्बर के बड़े-बूढ़ों की परवाह न करते हुए चीख उठी थी, 'कहीं नहीं जाएगी काकी। उन कसाईयों के पास उसे भेजने की बजाए उसे अपने खेतों के पास वाली नहर में ही धक्का क्यों न दे दिया जाए। बिना किसी बुलावे के या बिना कुछ कहे सुने व बिना कोई इकरारनामे काकी को ससुराल भेज देंगे तो वे ससुरे इस बार जलाकर मार डालेंगे इस मासूम बेजुबान लड़की को। फिर उनका एकाध आदमी तुम मार आना और सारी उम्र कोर्ट-कचहरी के चक्कर में अपने आधे खेतों को रहन पर रखवा देना।' दूसरी बार काकी के इकलौते भाई की आंखों में खून उतर आया था जब उसने हवेली के दरवाजे से ही चीखकर कहा था, 'काकी ससुराल नहीं जाएगी, उन्हें आ कर हमसे माफी मांगनी होगी। ये हर तीसरे दिन का बखेड़ा अच्छा नहीं। क्या फायदा किसी की जान चली जाएगी और कोई दूसरा जेल में अपनी जवानी गला देगा। बेहतर है कि कुछ और ही सोचो काकी के लिए।' काकी के लिए बस तीन बार पूरा कुनबा जुटा था उसके आंगन में। काकी को यहीं मायके में रखने पर सहमति बनाकर वे लोग अपने-अपने कामों में मसरूफ हो गए थे। उसके बाद काकी के बारे में सोचने की किसी ने जरूरत नहीं समझी और न ही कोई ऐसा मौका आया कि काकी के बारे में कोई महत्वपूर्ण फैसला लेना पड़े।

काकी का कसूर सिर्फ इतना था कि वह गूंगी थी और बहरी भी। मगर गूंगी तो गांव की 99 फीसदी लड़कियां होती हैं। क्या उनके बारे में भी कुनबा, टब्बर पंचायत या बिरादरी आंखें मींचकर फैसले करती है। कोई एकाध सिरफिरी लड़की अपने बारे में लिए गए इन एकतरफा फैसलों के खिलाफ बोल भी पड़ती है तो उसके अपने ही भाइयों की आंखों में खून उतर आता है, ससुर की लाठी उस पर प्रहार करती है या उसके जेठ के हाथ उसके बाल नौचने लगते हैं।

काकी का कसूर सिर्फ इतना था कि वह गूंगी थी और बहरी भी। मगर गूंगी तो गांव की 99 फीसदी लड़कियां होती हैं। क्या उनके बारे में भी कुनबा, टब्बर पंचायत या बिरादरी आंखें मींचकर फैसले करती है। कोई एकाध सिरफिरी लड़की अपने बारे में लिए गए इन एकतरफा फैसलों के खिलाफ बोल भी पड़ती है तो उसके अपने ही भाइयों की आंखों में खून उतर आता है, ससुर की लाठी उस पर प्रहार करती है या उसके जेठ के हाथ उसके बाल नौचने लगते हैं।

ऐसी सिरफिरी मुहंफट लड़की की मां बस इतना कहकर चुप हो जाती है कि जहां एक लड़की की डोली उतरती है वहां से ही उसकी अर्थी उठती है। यह एक हारे हुए त्रस्त आदमी का बेमेल-सा तर्क ही तो है। एक अकेली छुई-मुई लड़की क्या विद्रोह करे। उसे किसी फैसले में कब शामिल किया जाता है। सदियों से उसके खिलाफ फतवे ही जारी होते रहे हैं। वह कुछ बोले तो बिजली टूट कर गिरती है, आसमान फट पड़ता है।

अनगनित लोगों की शादियां टूटती हैं मगर वे सब पागल नहीं हो जाते। बेहतर तो यही होता कि अपनी नाकामयाब शादी के बारे में काकी जितना जल्दी होता भूल जाती। ये शादी-ब्याह के मामले थाने-कचहरी में चले जाएं तो फिर रुसवाई तो तयशुदा ही है। आखिर हुआ क्या। शीशा पत्थर से टकराया और चूर-चूर हो गया। काकी का वह हरामी पति तो पहले भी वैसा ही था --- लम्पट और औरतबाज और बाद में भी वैसा ही बना रहा। उससे अलग होने के बाद भी उसके जीवन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा।

काकी के कुनबे का फैसला सुनने के बाद तो वह हर तरफ से मुक्त हो चुका था। उसके सुख के सारे दरवाजे खुल गए मगर काकी का मोहभंग हो गया। अब वह खुद को एक अभिशप्त स्त्री मानने लगी थी। प्रेम या विवाह के बारे में सोचकर ही उसका अन्तस चीखने लगता।

भरी जवानी में ही काकी को हर रस, रंग, साज और मौज-मस्ती से विरक्ति-सी हो गई थी। उसके मन में नफरत और प्रतिशोध के नागफनी इतने विकराल आकार लेते गए कि फिर उनमें किसी दूसरे आदमी के प्रति प्यार या चाहत के फूल खिल ही न सके।

किसी ने उसे यह नहीं समझाया - 'लाडो, अपने बेवफा हरामी शौहर के फिर मुंह लगेगी तो क्या हासिल होगा तुझे। वह सच्चा होता तो क्या यूं छोड़कर जाता तुझे। उसे वापिस ले भी जाएगा तो क्या अब वह तेरे भरोसे लायक बचा है। क्या करेगी अब उसका तू। वह तो ऐसी चीज है कि जो निगले भी नहीं बनेगा और बाहर थूकेगी तो भी कसैली हो जाएगी तू। वह तो बदचलन है ही, तू भी अगर उसकी तलाश में थाना- कचहरी जाएगी तो तू तो वैसी ही हो जाएगी। शरीफ लोगों का काम नहीं यह सब।' कोई तो एक बार उसे कहता, 'देख काकी, तेरे पास हुस्न है, जवानी है, अरमान हैं। तू क्यों आग में झौंकती है खुद को। दफा कर ऐसे भ्रष्ट पति को। पीछा छोड़ उसका। तू घर बसा ले। वह आकर तुझ पर अपना दावा दायर करने से रहा। फिर किस आधार पर वह तुम पर अपना अधिकार जमाएगा। इतने सालों से तेरे लिए बिलकुल पराया था। तेरी तन की जमीन को बंजर ही बनाता रहा वह। शादी के बाद के कुछ दिनों में ही तेरे साथ रहा-सोया वह। यह तो अच्छा हुआ कि तेरी कोख में अपना कोई गन्दा बीज रोपकर नहीं गया वह दुष्ट वर्ना फिर तो सारी उम्र उससे जान छुड़ानी मुश्किल हो जाती तुझे।' तीन बार काकी के बारे में कुनबे ने फतबे जारी किए थे। पहली बार भी काकी की बेबे ने ऐसे ही विद्रोही शब्द कहे थे - कहीं नहीं जाएगी काकी।

पहली बार गांव में तब हंगामा हुआ था जब काकी दीनू काका के बेटे रमेश के बहकावे में आ गई थी और उसने उसके साथ भाग जाने की योजना बना ली थी। वह करती भी तो क्या करती। 35 बरस की हो गई थी मगर कहीं उसके रिश्ते की बात जम नहीं रही थी। ऐसे में लड़कियां कब तक खिड़कियों के बाहर तांक-झांक करती रहें कि उनके सपनों का राजकुमार कब आएगा। इन दिनों राजकुमार लड़की के रंग-रूप या गुण नहीं देखता वह उसके पिता की जागीर पर नजर रखता है जहां से उसे मोटा दहेज मिलना होता है।

जसविंदर शर्मा

गरीब की बेटी और वह भी जन्म से गूंगी व बहरी। काकी गजब की सुंदर थी। घर के कामकाज में भी दक्ष। गोरी-चिट्टी, लम्बा कद। मगर उसके साथ जिन्दगी बिताने के बारे में सोचने मात्र की कोई कल्पना नहीं करता था। खुद के लिए कुछेक शब्द घड़े थे उसने जिसके बल पर घरवालों व परिचितों से टूटी-फूटी बातें कर लेती थी काकी। ज्यादातर इशारों व आं-उं से ही बात करती व समझाती थी वह।

लड़की जात थी वह। सभी चाहते थे कि उसके दिल की बात उसके दिल में ही रहे। पहली गलती को तो सभी माफ कर देते हैं मगर उन दिनों में ऐसी गलती करने की जुर्रत किसी लड़की में नहीं होती थी। हर लड़की शादी होने से पहले अपने आप में सिमटकर रहती थी जैसे गुलाब की बंद कली होती है या जैसे सीपी में मोती बंद रहता है। मजाल है सिर का पल्लू भी नीचे सरक सके। वैसे तो किसी कुंवारी लड़की का दिल धड़कना ही नहीं चाहिए अगर धड़के भी तो किसी को कानोंकान खबर न हो वर्ना बरछे, तलवारे व गंडासियां लहराने लगती हैं। ये कैसा निजाम है कि जहां मर्द पचासों जगह मुंह मार सकता था मगर औरत अपने दिल के आईने में किसी पराए मर्द की तस्वीर नहीं देख सकती थी। न शादी से पहले और शादी के बाद तो कतई नहीं।

काकी ने बहुत इन्तजार किया। भरी जवानी के खुलते राज उस गूंगी व चुप्पा किस्म की लड़की को कई लोगों ने समझाने की कोशिश की जिनमें काकी के नजदीकी रिश्तेदारों को ज्यादा मौके मिले मगर ये लोग काकी के दिल के साज की तारों को बेतरतीब तरीके से बस झंकृत ही कर पाए।

हां, दीनू काका के फौजी बेटे रमेश का दिल काकी पर सचमुच फिदा हो गया था। काकी भी उससे बेपनाह मुहब्बत करने लगी थी। मगर कहां दीनू काका की लम्बी-चौड़ी खेती और कहां काकी का गरीब कुनबा। कोई मेल नहीं था दोनों परिवारों में। गांव में रमेश जैसे पक्की सरकारी नौकरी वाले रिश्ते को हथियाने के लिए लड़कियों के मां-बाप क्या कुछ नहीं कर गुजरते।

पहली ही नजर में रमेश काकी पर सर्वस्व लुटा बैठा मगर काकी को क्या पता था कि ऐसा प्यार उसके भविष्य को चौपट कर देगा। रमेश जानता था कि उसके परिवारवाले उस गूंगी लड़की से उसकी शादी नहीं होने देंगे। बस एक ही रास्ता बचा था कि कहीं भाग कर शादी कर ली जाए। उनकी इस गुप्त योजना का पता अगले ही दिन चल गया था और कई परिवार जो रमेश के साथ अपनी लड़की का रिश्ता जोड़ना चाहते थे, सब दिशाओं में फैल गए। इश्क और मुश्क कहां छिपते हैं भला। फिर जब सारी दुनिया प्रेमियों के खिलाफ हो जाए तो उस प्यार को जमाने वालों की बुरी नजर लग जाती है। इसी धरती पर हीर-रांझा, लैला-मजनूं, शीरी-फरहाद आदि ने प्रेम करके कितनी जिल्लतें सही कि जिन्हें कर-करके मानवता ताउम्र रोती रहेगी। इसी धरती पर शादियां तो कोई जितनी चाहे कर ले मगर प्रेम करेगा तो दुनिया वाले उसे जीने नहीं देंगे।

काकी का बचपन बड़े प्यार और खुशनुमा माहौल में बीता। उसके छोटे भाई राजा को कोई चिढ़ाता, डांटता या मारता तो काकी की आंखें छलछला आती। अपनी भैंसे की एक साल की भूरी कट्टी के मरने पर दो दिन रोती रही थी वह। जब उसका प्यारा कुत्ता मरा तो कैसे फट पड़ी थी वह।

सबसे ज्यादा दुख तो उसे पिता के मरने पर हुआ था। बेबे के गले लगकर इतना ज्यादा रोई थी मानो सारे दुखों का अन्त ही कर डालेगी। आंसू चूक गए। आवाज तो पहले से ही गूंगी थी, बस गला भर-भर करता था और दिल रेशा-रेशा बिखरता जाता था। सब कुछ खत्म-सा हो गया था तब।

अब जिन्दा बच गई थी तो जीना तो था ही न। दुखों को रो-रोकर हल्का कर लेने की आदत तब से ही पड़ गई थी उसे। दुख रोने से और बढ़ते जाते थे। रमेश से बलात छीनकर काकी को दूर फैंक दिया गया था एक अधेड़ उम्र के पिलपिले गरीब किसान के झोंपड़े में जहां उसके जवान बेटों की भूखी नजरें काकी को नोचने पर आमादा थी। काकी वहां कितने दिन साबुत बची रहती। भाग आई भेड़ियों के उस जंगल से। कोई रास्ता नहीं था उस जंगल से बाहर निकलने का।

जो रास्ता काकी ने खुद चुना था उसके दरम्यान सैंकड़ों लोग खड़े हो गए थे। काकी के मायके की खराब तो न थी मगर इतने सोखे दिन भी नहीं थे कि कई दिन दिल खोलकर हंस लिया जाए। कभी धरती पर पड़े बीजों के अंकुरित होने पर नजरें गड़ी रहती तो कभी आसमान के बादलों से मुरादें मांगती झोलियां फैलाए बैठी रहती मां-बेटी। रमेश से छिटक कर और फिर ससुराल से ठुकराई जाने के बाद काकी का दिल बुरी तरह हार माने बैठा था।

अब उसने अपनी देखभाल करनी छोड़ दी थी। उसकी बेबे उससे अक्सर कहती कि गरीब की जवानी और पौष की चांदनी रात को कौन देखता है। फटी हुई आंखों से काकी इस बात को समझने की कोशिश करती। बेबे झुंझलाकर कहती, 'मोइए, तू तो जुबान से ही नहीं दिल से भी बिल्कुल गूंगी ही है। मेरे कहने का अर्थ है कि जैसे पूस की कड़कती सर्दी वाली रात में चांदनी को निहारने कोई नहीं बाहर निकलता वैसे ही गरीब की जवानी को कोई नहीं देखता।' बेबे चल बसी। काकी के भाई की गृहस्थी बड़ चली थी। काकी की अपनी भाभी से जरा नहीं बनती थी। अब काकी काफी चिड़चिड़ी हो गई थी। भाई से अनबन क्या हुई काकी तो दर-ब-दर की ठोकरें खाने लगी। कभी चाची के पास कुछ दिन रहती तो कभी बुआ के काम कर करके थक-टूट जाती थी काकी। एक बार खाट से क्या लगी कि सब उसे बोझ समझने लगे थे।

आखिरकार काकी की बिरादरी ने एक बार फिर काकी के बारे में फैसला करने के लिए समय निकाला।

इन लोगों ने उसके लिए हब्दे की व्यवस्था कर दी जिसके तहत दिन तय कर दिए गए कि कुलीन व खाते-पीते घरों में जाकर काकी खाना खा लिया करेगी। कुछ दिन तक यह बंदोबस्त चला मगर काकी को यू आंखें झुकाकर गैर लोगों के घर जाकर रहम की भीख खाना चुबने लगा।

अपनी बिरादरी के अब तक के तमाम फैसलों का काकी ने विरोध नहीं किया था मगर इस आखिरी फैसले का काकी ने जवाब दिया। सुबह उसकी लाश नहर से बरामद हुई थी। अब काकी गूंगी बहरी ही नहीं बल्कि आहिल्य की तरह सर्द नीला पत्थर हो चुकी थी।

000

कविता

सावन आया

सृष्टि सारी तड़प उठी तो,
अम्बर ने फिर जल बरसाया।
शोर मच गया चारों ओर,
देखो भईया सावन आया।
पहले घुटन हुई मौसम में
स्वेट देह का खूब बहाया।
चारों ओर से बादल आ गये,
फिर घनघोर अंधेरा छाया।
देखो भईया....
लगे घूमने कड़क-कड़क कर,
लगे डराने भीम रूप धर।
बिजली कड़की बड़े जोर से,
बादल आपस में टकराया।।
देखो भईया....
बड़े जोर से बरसे बादल
चहुं ओर हुआ जल ही जल
कलियां खिल कर लगी हंसने
पपीहे ने फिर गाना गाया
देखो भईया...
लगी तोड़ने मर्यादा को,
नाले के जल की धारा।
धरती सारी हरी हो गई,
ताप जेठ को दूर भगाया।
देखो भईया सावन आया।।

गोपाल शर्मा

सामान्य ज्ञान

डोलड्रम या प्रशांत क्षेत्र क्या है?

यह निम्न वायुदाब वाली भूमध्य रेखीय पेटी है, जहां उत्तरी पूर्वी व्यापारिक पवन तथा दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनों का अभिसरण होता है, जिससे धरातल की वायु लगभग शांत रहती है अथवा अति मंद गति से चलती है। इस पेटी से वायु ऊपर की ओर उठती है, जिसके कारण वायु के शांत होने या मंद होने पर भी मौसम प्राय: अशान्त और तूफानी होता है, जिससे अचानक उत्पन्न झंझावत के साथ तीव्र वर्षा होती है। डोलड्रम की स्थिति एवं विस्तार में सूर्य के उत्तरायन एवं दक्षिणायन गतिशीलता के कारण कुछ खिसकाव होता रहता है, जो 5° उत्तरी और 5° दक्षिणी अक्षांशों के साथ होता है।

1. हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय कब अस्तित्व में आया ?
2. लार्ड वेवैल के नेतृत्व में शिमला सम्मेलन कब हुआ था ?
3. हिमाचल में पहली गैर कांग्रेस सरकार कब बनी थी ?
4. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय का पहला वाइस चांसलर कौन था ?
5. हिमाचल के नवनियुक्त राज्यपाल का क्या नाम है ?
6. लाहौल में कितने बौद्ध मठ है ?
7. हिमाचल प्रदेश में अधिकतर बौद्ध अनुयाइयों का सम्बन्ध कौन से स्कूल से है ?
8. हरणातर किस जिले का लोकनाटक है ?
9. भारत में फ्रांसीसियों ने अपना सबसे पहला कारखाना कहां लगाया था ?
10. किस ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने भारत में क्रिप्स मिशन भेजा था ?
11. क्योटो उपसन्धि कब से प्रभावी हुई थी ?
12. भारत के किस राज्यों में अभी तक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित नहीं किए गए हैं ?
13. राष्ट्रीय मैराथन दौड़ सर्वप्रथम कब आयोजित की गई थी ?
14. यूनेस्को द्वारा वर्ष 2019 के लिए किसे विश्व पुस्तक राजधानी घोषित किया गया है ?
15. 2022 में होने वाले कॉमनवेल्थ खेलों में महिलाओं के किस खेल को सम्मिलित करने के लिए नामित किया गया है ?

प्रस्तुति : नर्बदा कंवर

उत्तर- 1. 1971, 2. 25 जून, 1945 में, 3. 1977 में, 4. डॉ. रामकरण सिंह, 5. कलराज मिश्र (26वें राज्यपाल), 6. अट्ठारह., 7. बुद्ध धर्म के तीसरे स्कूल वज्रायान, 8. चम्बा, 9. सूरत (गुजरात), 10. विंस्टन चर्चिल ने, 11. 16 फरवरी, 2005 से, 12. सिक्किम एवं गोवा में, 13. 1987, कोलकाता में, 14. शारजाह को, 15. महिला क्रिकेट को।

स्वास्थ्य

सर्पदंश से बचाव एवं सावधानियां

शत्रुओं से रक्षा एवं भोजन के लिये अपने शिकार को मारने या पकड़ने के लिये सांप द्वारा विष का प्रयोग किया जाता है परन्तु आम धारणा के विपरीत ज्यादातर सांप जहरीले नहीं होते। प्रायः तिकोने सिर या लाल, पीली व सफेद धारियों वाले सांप जहरीले होते हैं।

विषैले सांप द्वारा काटे जाने के लक्षण प्रत्येक व्यक्ति पर भिन्न-भिन्न हो सकते हैं परन्तु विषैले सर्प द्वारा काटे जाने पर सामान्यतः निम्नलिखित

डी.डी. शर्मा

लक्षण दृष्टिगत होते हैं:

- घाव से खून मिश्रित रिसाव।
- त्वचा पर विषदंतों के निशान व आसपास सूजन।
- तीव्र स्थानीय पीड़ा।
- पेचिस।
- जलन।
- चक्कर आना व सर घूमना।
- कमजोरी।
- धुंधली दृष्टि।
- अत्यधिक पसीना आना।
- ज्वर।
- अत्यधिक प्यास लगना व गला सूखना।
- उल्टी।
- तीव्र हृदयगति।

सांप द्वारा काटे जाने पर क्या करें

➲ सांप द्वारा पुनः काटे जाने के जोखिम को दूर करने हेतु पीड़ित व्यक्ति को नजदीकी सुरक्षित स्थान पर ले जायें।

➲ सम्भव हो तो सांप की प्रजाति विषयक जानकारी इकट्ठा करें।

➲ पीड़ित व्यक्ति को ढ़ाढ़स बधायें।

➲ तंग कपड़े व अंगूठी,घड़ी आदि निकाल दें।

➲ काटे गये स्थान के कुछ इंच ऊपर और नीचे कस कर बांधे। ध्यान रहे कि यह खून के प्रवाह को धीमा करने के लिये किया गया है न कि उसे रोकने के लिये । इन बंधनों को 10 मिनट से ज्यादा समय तक लगातार नही बांधा जाना चाहिये।

➲ सांप द्वारा काटे गये स्थान पर किसी भी प्रकार का अतिरिक्त घाव किये बिना काटे जाने के तुरन्त बाद जहर को शरीर से बाहर खींचने का प्रयास करें। इस कार्य को मुंह द्वारा या फिर खीचने वाले पम्प (suction pump) की सहायता से किया जा सकता है। मुंह में छाले या घाव होने पर ऐसा किया जाना खतरनाक हो सकता है। जहर को शरीर से बाहर निकालने के लिये सुई रहित (disposable syringe) का प्रयोग भी किया जा सकता है।

पीड़ित व्यक्ति को उत्तेजित न करें और न ही चलने-फिरने दें। ऐसा करने से रक्त के प्रवाह में तेजी आयेगी और विष जल्दी फैलेगा।

➲ घाव को साबुन व पानी से धो लें।

➲ सम्पूर्ण प्रभावित भाग पर जीवाणु-रोधक मरहम लगायें व घाव के समीप ठंडी पट्टी प्रयोग में लायें।

➲ अत्याधिक ठंड से हो सकने वाली क्षति के दृष्टिगत ठंडी पट्टी के स्थान को कुछ समय के बाद परिवर्तित करते रहें।

➲ सांप द्वारा काटे गये शरीर के भाग को उंचा उठा कर रखें।

➲ पीड़ित व्यक्ति को किसी भी प्रकार की शारीरिक क्रिया न करने दें।

➲ सांप द्वारा काटे गये व्यक्ति को पीने के लिये किसी भी प्रकार का तरल पदार्थ न दें।

➲ पीड़ित व्यक्ति को सोने न दें।

➲ पीड़ित व्यक्ति को गर्म रखें।

➲ सांप द्वारा काटे गये स्थान के चारों ओर एक छोटे गोले के रूप में उपयुक्त स्तर के डी.सी. विद्युतीय करंट के एक सैकण्ड अवधि के झटके दिये जा सकते हैं व इनकी 15 मिनट के पश्चात पुनरावृत्ति की जा सकती है ।

➲ पीड़ित व्यक्ति को यथाशीघ्र निकटतम चिकित्सालय स्थानान्तरित करें व स्थानान्तरण की अवधि में अधिक शारीरिक क्रिया न होने दें।

सर्पदंश : क्या न करें

☛ पीड़ित व्यक्ति को उत्तेजित न करें और न ही चलने-फिरने दें। ऐसा करने से रक्त के प्रवाह में तेजी आयेगी और विष जल्दी फैलेगा।

☛ सर्पदंश के स्थान पर किसी भी प्रकार का घाव न करें।

☛ सांप को पकड़ने का प्रयास न करें। प्रशिक्षित व्यक्ति सर्पदंश के आधार पर उपचार (antidote) सम्बन्धित उचित निर्णय ले सकता है।

☛ पीड़ित व्यक्ति को किसी भी प्रकार का मादक पदार्थ न दें।

सर्पदंश से बचाव

अनजाने में सांप के ऊपर पांव पड़ जाने की स्थिति में सर्पदंश से बच पाना सम्भव नहीं है, परन्तु निम्नलिखित कुछ सावधानियों से सर्पदंश की सम्भावना को न्यून किया जा सकता है :

▶ सांप को अकेला छोड़ दें। कई बार सांप को मारने या फिर उसके ज्यादा नजदीक जाने के प्रयास के कारण लोग सर्पदंश का शिकार बन जाते हैं।

▶ यदि मजबूत चमड़े के जूते न पहने हों तो ऊंची घास वाले स्थानों से दूर रहें और जहां तक सम्भव हो स्वयं को पगडंडियों तक सीमित रखें।

▶ अपने हाथ व पैर को उन स्थानों से यथासम्भव दूर रखें जहां पर आपकी दृष्टि न पड़ती हो।

▶ जब तक आप सांप की आक्रमण परिधि से सुरिक्षत दूरी पर न हों पत्थर व लकड़ी उठाने का प्रयास न करें।

▶ चट्टानी क्षेत्र में भ्रमण करते समय सावधान रहें।

ग़ज़लें

एक

या खुदा ! रास्ता दिखा मुझको।
ज़ीस्त का कुछ तो दे पता मुझको।

जिंदगी ये लगे सज़ा मुझको।
अब न दे और कुछ दुआ मुझको।

मार डाला ज़मीर सबने ही।
कौन देगा बता सदा मुझको।

हर घड़ी नाम तेरा ही लूँ मैं।
तूने पागल बना दिया मुझको।

वो जो मँझधार से निकल आया।
कह रहा था खुदा मिला मुझको।

दो कदम भी चला नहीं खुद जो।
रास्ता वो बता रहा मुझको।

सूख जाए न ज़ख्म मेरे कहीं।
दर्द की दास्ताँ सुना मुझको।

आजतक झूठ सिर्फ बोला गया।
हर जगह सच लिखा मिला मुझको।

मुश्किलें झेली बाप ने कितनी।
बाप बनकर पता चला मुझको।

जब नहीं है कोई गुनाह मेरा।
तब तरुण क्यों मिली सज़ा मुझको।

दो

वो पागल है कथन है ये सभी का।
पता जो ढूंढता है आदमी का।

वही देगा वही देता रहा है।
किसी के दर झुके क्यों सर किसी का।

मरा है जो मरा है बस तड़प कर।
मुदावा ही नहीं दिल की लगी का।

निशां वो छोड़ जाते हैं जहां में।
करम जिनका रहा है आदमी का।

कि दीवारें भी ढह जाती है इसमें।
असर देखा है मैंने ये नमी का।

नहीं बनती किसी की भी कहानी।
यही तो फलसफा है जिन्दगी का।

कुलदीप गर्ग तरुण

औषधीय गुणों से भरपूर जामुन

हर मौसम में फलों का अपना-अपना महत्व है। जामुन खाने में तो स्वादिष्ट होता ही है, साथ ही इसके कई औषधीय गुण भी होते हैं। जामुन को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है -राजमन, काला जामुन, जमाली। जामुन में भरपूर मात्रा में ग्लूकोज और फ्रक्टोज पाया जाता है। जामुन में लगभग वे सभी जरूरी लवण पाये जाते हैं जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है। यह एक मौसमी फल है। जामुन अम्लीय प्रकृति का फल है पर यह स्वाद में मीठा होता है।

जामुन खाने के फायदे

पाचन क्रिया के लिए जामुन बहुत फायदेमंद होता है। जामुन खाने से पेट से जुड़ी कई समस्याएं दूर हो जाती हैं।

मधुमेह के रोगियों के लिए जामुन एक रामबाण उपाय है। जामुन के बीजों को सुखाकर पीस लें। इस पाउडर को खाने से मधुमेह के रोगियों को फायदा पहुंचाता है।

अगर किसी को दस्त हो रहे हों तो जामुन को सेंधा नमक के साथ खाना फायेदेमंद रहता है। खूनी दस्त होने पर भी जामुन के बीज फायदेमंद साबित होते है।

दांत और मसुड़ों से जुड़ी समस्याओं के समाधान में जामुन विशेष तौर पर फायदेमंद होता है।

मुहांसे हो जाने पर जामुन की गुठलियों का पाउडर बनाकर चेहरे पर लगाने से फायदा होता है।

मुंह में छाले हो जाने पर जामुन के रस का प्रयोग करने से छाले समाप्त हो जाते हैं।

जामुन खाने से पथरी में फायदा होता है।

जीवन धीमान

मौकों का सदुपयोग है सफलता का पैमाना

देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी का कहना था कि इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं। इसलिए हमें मौकों का इंतजार करने की बजाय वर्तमान हालात में ही अपने लिए मौके खोजने चाहिए।

हर इंसान में किसी न किसी तरह की रचनात्मकता जरूर होती है। इसलिए हमें लगातार अपनी रचनात्मकता को निखारने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि हम अपने जीवन में और भी बेहतर कर सकें। क्रिएटिव वह है, जो केवल स्वप्न ही नहीं देखता बल्कि उन स्वप्नों को साकार करने के लिए काम करता है। क्रिएटिव वह है, जो अंधेरों में भी कूदने का साहस रखता है और चुनौतियों को स्वीकारने में तत्पर रहता है।

कोई ऐसा काम करना चाहिए, जिसे आप हमेशा से करना चाहते थे। नए विषयों का अध्ययन करें और नए विचारों की जाँच करें। देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी कहा करते थे कि हमारे अंदर अलग सोच रखने का साहस, नये रास्तों पर चलने का साहस, आविष्कार करने का साहस होना चाहिए। हमें समस्याओं से लड़ना और उनसे जीतना आना चाहिए। इन गुणों को हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

सीखने की कोई उम्र नहीं होती

रोमन देशभक्त मार्कस पोर्सियस केटो ने अस्सी साल की उम्र में ग्रीक भाषा सीखी। महान जर्मन-अमेरिकन कलाकार मैडम अर्नेस्टाइन शूमैन-हेंक दादी बनने के बाद अपने संगीत के माध्यम से सफलता के शिखर पर पहुँची। यूनानी दार्शनिक सुकरात ने वाद्ययंत्र बजाना तब सीखा, जब वे अस्सी साल के थे। माइकलएंजेलो अस्सी साल की

डॉ. जगदीश गांधी

उम्र में अपने सबसे महान कैनवास पर पेंटिंग कर रहे थे। अस्सी साल की उम्र में सियोस सायमनाइडस ने कविता का पुरस्कार जीता, और लियोपॉल्ड वॉन रैंके ने अपनी हिस्ट्री आफ द वर्ल्ड शुरू की, जिसे उन्होंने बानवे साल की उम्र में पूरा किया। अठासी साल की उम्र में जॉन वेस्ली मेथोडिज्म पर भाषण दे रहे थे और मार्गदर्शन दे रहे थे।

जीवन की अंतिम सांस तक जीने का उत्साह बना रहना चाहिए

एक सौ दसवें जन्मदिन पर कैलमेंट को दुनिया भर से बधाइयाँ और शुभकामनाएँ मिली। एक सौ अठहरवें जन्मदिन ने उन्हें इतिहास में सबसे अधिक उम्र का व्यक्ति बना दिया। जब उनसे पूछा गया कि यह कैसे सभंव हुआ ? तो वे बोलीं, **''मैंने अपने जीवन के हर मौके का सदुपयोग किया।'' एक सौ बाईस साल की होने पर भी उनकी ललक, उत्साह व सकारात्मकता हमेशा की तरह मंत्रमुग्ध करने वाली थी।**

शीर्षस्थ हार्ट सर्जन माइकल डेबेकी ने खून का पहला रोलर पंप 1932 में ईजाद किया था। उनका बनाया पंप आज भी बाइपास सर्जरी में प्रयुक्त होता है।

नब्बे साल की उम्र में डॉक्टर डेबेकी को एक नए आविष्कार पर प्रयोग शुरू करने की अनुमति मिली। यह एक छोटा पंप था, जिसे गंभीर हृदय रोगियों के सीने में लगाया जा सकता था। डेबेकी सिर्फ शोध से ही संतुष्ट नहीं थे। वे सर्जरी भी करते रहे। उनके बारे में एक सहयोगी ने कहा था, ''उन्होंने जितना किया है, उतना करने के लिये बाकी लोगों को पाँच-छह जन्म लेने पड़ेंगे।''

डेबेकी ने नब्बे साल की उम्र में अपने जीवनदर्शन का सार इस तरह से व्यक्त किया था, **''जब तक आपके सामने चुनौतियाँ हैं और आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम हैं, तब तक जीवन रोमांचक और स्फूर्तिवान है।**

युवा मंच

कैटरिंग: करियर है बेमिसाल

रेस्तरां या फास्ट फूड ज्वाइंट के बढ़ते विस्तार के बाद तो कैटरिंग अब बिजनेस का रूप अख्तियार कर चुका है। जहां इतने सारे होटल, रेस्तरां होंगे वहां कैटरिंग के काम की भी डिमांड होगी। कैटरिंग एक सेवा देने वाली इंडस्ट्री है, जिसमें ग्राहकों को उनकी मांग के अनुसार सुविधाएं दी जाती है। इस काम के लिए पूरी तरह से कार्यकुशल और प्रभावशाली व्यक्तित्व का होना जरूरी है।

कोर्स

कैटरिंग होटल मैनेजमेंट का अहम पार्ट है। ऐसे संस्थानों की कोई कमी नहीं है, जो कैटरिंग के कोर्सेस उपलब्ध कराते हैं। इन कोर्सों की अवधि संस्थानों पर निर्भर करती है। यहां इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि अच्छे संस्थान से लिया गया प्रशिक्षण बेहतर रोजगार दिलाने में कारगर होता है। आजकल कैटरिंग से जुड़े हुए बहुत से कोर्सेस उपलब्ध है, जिसके माध्यम से आप अपने को एक बेहतरीन कैटरर बना सकते हैं।

योग्यता

कैटरिंग के लिए पहले किसी कोर्स या योग्यता की दरकार नहीं थी, लेकिन पिछले कुछ समय से इसमें सर्टिफिकेट, डिप्लोमा जैसे कोर्स भी कराए जाने लगे हैं। मान्यता प्राप्त बोर्ड या विश्वविद्यालय से 12वीं या स्नातक होना जरूरी है। 12वीं में अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ी होनी चाहिए। इस इंडस्ट्री में कामयाब होने के लिए कुछ व्यक्तिगत गुणों का होना भी जरूरी है जैसे, मृदुभाषी होना, कितनी भी परेशानी हो, चेहरे पर न आने देना, सेवा सत्कार को धर्म की श्रेणी में रखना आदि।

अवसर

जॉब के नजरिए से यह क्षेत्र काफी धनी है। इसमें आप एयरलाइन कैटरिंग एवं केबिन सर्विस, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन एंड कैटरिंग, होटल और टूरिज्म एसोसिएशन आदि के साथ जुड़कर भी काम कर सकते हैं। इसका प्रशिक्षण लेने वाले अधिकतर लोग होटलों में काम करना ही पंसद करते हैं।

प्रमुख संस्थन

इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली www.ignou.ac.in

डीपीएमआई, नई दिल्ली www.dpmiindia.com

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट विभाग, कुरूक्षेत्र हरियाणा www.kuk.ac.in

क्रैडल इंस्टिटयूट ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज www.cmi-hm.com

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 7 अगस्त, 2019

व्यंग्य

पोरू देअ मौनें इन्ही देअ बन्नें

राजेश शर्मा

रामदास रै दुई बाकरी, दुई बल्द और एक गाअ। तेरो सेजो ही जीऊणों। से राते–दुसौ तिंदरी खातिरदारी द मस्त। केबी तिनखी पाणे दिणनो, केबी जोडी घास रा इन्तजाम करणा। केबी से जांगल दे चारणै खी नीनैं। तिन्दरी खातिर तेरो जीऊणो–मरनो। बाकि दुजी चीजौ खी तैखै वगत ही कैया हं था। तैंरै लेखै दुनियां गोल। हालांकि से जादा पढा–लिखा नई था। तेस टाईम रे पढाए, पांजवी खू ऊबा नेईं था कोई नईं पढादा। जेजा केजा हद पढादा था त से जादा से जादा होणा दशवी पास। तेती हुबे नई ह थे पढाए ही नेंहीं। रामदास था तेती पांजवी तेई पढादा। पर भूषौ लाऊ था इण्णी कि जानत तू होणा बी.ए. पास। आपणै असुल रा था बडा पाका। एकी बारी जू सूंचौ था तैअ तीणो ही आपणी जिन्दगी गेई अजमांअ था। बचपन दा बचारा छोटा छूटा।

जीन्दगी दो बचारै का–का नेई भूकतो, लोग रै गोरू चारै, झूठो भाजों, झूठो खाओ। तैंरै न आपणा ठिकाणा ह था न अपडै जूडकै रा। दुजै री बोली शुणीयौ बडा हुआ। मां–बाप थै नेईं। एखली रो जीऊणो। न केजै शादी खी पुछा, न केजी दुजी जरूरत खी। लोग रा था टल्लू टैआंदा। से था लोग रै गंठ्ठी दा खोजणै खी टैआंदा।

दुई मजिंले रो एक घौर थो। हुबी बिल्लौ रह था आपू, उटी बिल्लौ छांडो था आपणी तीनौ गोरू बाकरी। बस सेजे जीन्दगें थे तेस गरीब आदमी रे। ऐबै उमर भी काफी ढलेगे थे। दाडी, मुछौ, रौडें रे बाल सारे थै सफेद।

हांडदे, ड़िऊदें मुखें कई बार मिलौ था। केबी घासौ गिनिय, केबी जोडी गिनिय और हमेशा ही पुराणी–पुराणी कथै शणाअ था। बासीए पताईय बोलौ था। 'महारो पहाडी लौगौ रो बडी मुसिबते रो जीऊणो।' असौ भी सती। बोली न कि नैणै और सैणे रे भूष हौ हमेशा सते। रामदास भी कोई बैंरै लाअ था बडी ठगडी भूषौ। मूं आअ थे बड़े मौजा तेरी भूषौ शुणिय।

हांअ आपणे काम दी तेईं चालादा, तेतियै गौआ बै रामदास बाटौ दा मिले।

पीठे दा जोडी रा भार्टा और तेस भार्टे थाली नई था से धिशौ ही नेईं।

'किंदा चाला चाचेया ?' मोएं गोआ बै ढेडे।

रामदासै भार्टा निऊंणा छाडा। दुई ऐती लाम्बी शुई गाडी और उछ्कु डूअंः गोआ बोठे।

'इंन्दा बै रोजकै पापलौ पिरदा।'

'तौई शणा ?' मौएं बोलो।

'आजकाली बला ये इलैक्शनणौ रो बडो थाटणो। ताखै त कौई मिलौ होणे लारैलप्पै लाणैं आलैं। इणो बोलौ आमै टेईं देश। वोट की तेईं ये मेरे आगुअै, एकी बारी कुर्शे मिले नेईं तैबे नेईं परैणदैं भी नेईं। ए त इणै माता रौंग बिरौंगे। आज ऐजै रंग रे काले सैजें रौंग रै। विकास करौ। कैयरो विकास करौं, विकास पीठे पाछु।'

'सौचो लाओ आरा चाचेया।' जैबै केजै रै जीअरे भूष जाणने ह तौ तेरी भूष चैईं ठ्हिणें। मौएं भी कियो इणोही। रामदास इणा था पहले ही फिरै दै जै दिमाग रा। जेजै त तेरी भूष गेई जादा मनडू लाडो तेस साथी पशौल था बडा भारी।

'ऐ त रीढ री खुंबली माता। मारै घाघीं गरीब रै रोटी रै भी धैडै। मारी गरीबी गेई त ही इन्दरे राजनिते चालौ। आमू आम आदमी पशलाअ, करौ आपडै जीअ री। इन्दरै आपणी ही खिचडी पाकी दी। कामौ करनै रे नियत नेईं केजै रे ही नेईं। नेतै त नेतै आज त ईणो की आम आदमी भी धडैयां बणेगा। बस आपणो ही आछो देखौ। सरकारौ खु जू ऐड मिलौ तैअ खाणै आले कौई। तोल खू गाश तैईं सारै लिंबुएदै। जादा ए जू गोऊ खू गोंऊ ए रिगडू चाणै दै जादा खाणै आलै ए प। सरकारै नरेगा चला। लोगै का सूचों बल्ला मुफते रा पैसा आंदा लागा दा। काम नेई हुई रपै रो भी नेईं, अकडै पाथर पाअः धैडे लाए पूरै दुस रे। बोलणै खी इणो, सरकारी काम, ए चालौ इणो ही। तैबै देखौ माता इन शडके रै हाल। बीश–बीश सालौ होएगी एअ खोलिअ आज भी आअ बजट, कालै भी आअ बजट। बजट गौ न भागली दो बांटे। से नेईं आदों केबीयै नेईं। इन्दरों न माता खेगसू खोऊ ओ दो। विकास रा से मुद्‌दा से फशडौ हमेशा ही। आज नेईं बिजले, कालै नेई पाणे आम आदमी रै चैडै। आज त ऐजो बाचणो बडो मुश्किल केजा सौचा केजा झूठा। ऐओ त ऐजो कि मेरा काम बनता, भाड में जाए जनता।'

'से त ठीक न पर वोट जालो केजै न केजै खी पाणो ही। सेजो जाअ बै ऐबी सुचणो। सेजै खी ही दिणनो वोट जू लाग वै कि ए बै ठीक उम्मीदवार, ऐजा ही म्हारा अधिकार।'

रामदासै शायद मेरी भूष रो बुरो मानो। तिणै से आपणो मूं छोटो जेओ किओ जेथै तेंरै मुंअ सी सारी से झूरी साफ दिशदी लागी।

कुछ मुरझाईयौ जेओ बोलो–'इन्दो दे बै माता जाणे, वोट जादों न दिणनों ही, ऐबै इणो कि पोरू दे मौने, इन्ही दे बौनूने।' तेरी ऐजी भूष गेई मैंरै हासुऐ और से भी लागा जोरे–जोंरै हासदा। साथी–साथी आपणी–आपणी बाट दे लागै हाडंदे।

कबता

मां दी कोख

चंचल सरोलबी

मां दी कोख बेटी, रौंदी पुकार दी
बिन जम्मी पेटा विच, मिज्जो मत मारदी ।
कसम हो तिज्जो , मोह ममता पियार दी।
मिज्जो मत मारदी मां, मिज्‌जो मत मार दी।
मां दी कोख...।
मैं भी ता दिखणा तेरा, सहोणा सनसार मां।
अपणे ही खून जो, बेमौत मत मार मां।
तेरा ही अंस मैं, तेरा ही प्यार मां,
जीवन देई करि मिज्जो कर, उपकार मां।
मां दी कोख...।
झांसी दी राणी साही, लड़ी मैं दिखाण मां।
मदर टरीसा साही, बणी मैं दिखाना मां।
बेटी पराया धन, समझ ना भार मां,
कालजे दा टुकड़ा तेरे, खून दा लाल मां।
मां दी कोख...।
बेटी दा खेल है, ऐ सारा संसार मां,
बेटी का ही भैण, बहु रिश्ते, हजार मां।
बेटी दे बगैर महणु नी हुंकार मां,
बेटी दे बगैर होणा सुन्ना संसार मां।
मां की कोख...।
बेटी जग जननी है, करो सत्कार जी,
बेटी नव दुर्गा है, करो जै जै कार जी।
बेटी बचाओ लोको, बेटी पढ़ाओ जी,
भ्रुण हत्तेया दा कंलक, देश का मिटाओ जी।
मां की कोख बेटी, रौंदी पुकार दी
आण जम्मी पेटा विच मिज्जो मत मारदी...।

जीवनो मैय समस्याओ रा सामना

काफी समय पहले री बात असो। एक युवक प्राईवेट कम्पनी मैय काम करो था। से हमेशा अपनी जिंदगी में परेशान रो था। ओर सुबह–शाम परेशानियो रा रोना रोदां रो था। एकी दिना तैस रे शहरा मैंय एक महात्मा आए। ये युवक भी तीनो रे दर्शन करने चली गौआ। सभी लोगो महात्मा खै अपनी परेशानी बतौने लगी रोए थे। तब मौका पाकर युवके महात्मा सई बात की। उसने कहा, मैं बहुत परेशान असू। कृपा करो रो कोई तरीका बताई दो। कुछ इशा तरीका बताई दो जैते सई मेरी सारी परेशानियां दूर ओई सको आए।

यै सवाल सुनकर महात्मा मुस्कुराए ओर बोले, मै तेरी परेशानीयां रा हल कल बताऊगां, लेकिन मेरी एक शर्त असो। आज तेरे को मेरे ऊंटों री देखभाल करनी होगी। जब सारे ऊंट बैठ जाले तब तू सो जाना। युवक ने महात्मा री बात मान ली। अगले दिना महात्मे युवका दे पूछा तुमाखे नीदं किशी आई । मै पूरी रात बिल्कुल भी नहीं सोई रौआ। जब भी कोई एक ऊंट सोई जाओ था तो दूजा ऊंट खड़ा ओई जाओ था। ऐसी चक्करा मैंय सारी राती जागदा रौआ। युवको रे जबावा पांदे महात्मा जी बोले कै माखे मालूम था कै ईशा ही ओना। युवक बोला, जब तुमाखे ये सब पता था तब माखे ये काम क्यों दिया।

युवका रे ऐस सवाला पाए महात्मा जी बोले, कै जिंदगी मैय समस्याएं हमेशा बनी रो आए। जब एक समस्या खत्म होती है तो दूसरी उत्पन्न हो जाती है। ऐते री वजह सई समस्याओ सई परेशान नहीं ओना चाहिओ तिनो रा डटी रो मुकाबला, सामना करना चाहिओ।

–रमेश कुमार वर्मा

चान्नो–बान्नो

तेज सिंह पंवार

लोक कथा सुणने दूरा–दूरा ते आऊरे थे। चान्नो–बान्नो री आपणिया कथा–कहाणिया चालिया। तिन्हा बऊती टैमो बाद गल्ल–बात करने रा मोका मिलुरा था। आज तिन्हा खूब आपबितिया सुणनी–सुण्यणिया। तिन्हा आपणिया लीला ते मतलब आ।

'चान्नो' कथा सुणेन छोड़ ई आईगी। पुरोहिते एबू पाठ नपट्याया। तेते ते बाद कथा सण्वाणी। चान्नो चऊं कनारे नजर दोड़ाया करो थी। पंडालो दे होट बी जनाना–मर्द पहुंचीगे थे। कथा शुरू करने ते पहले कथा पढने वाले़ बोल्या, 'बोलो–राधे–राधे बोलो कृष्ण भगवान की...' (सबी जण्हेया बोल्या) जय। कथा बी शुरू हुई होर दुज्जे कनोर चान्नो बी कुछ चऊं कनारे देखदी–टोल़दी लगी। जणिए जे इसारा कुछ रहाचुरा हुंगा। कुछ घड़िया बाद कुछ जनाना होर आईआ। होर जेती जगह मिली, बैठी गिया। एक जण्ही चान्नोरिया बगला दे जाई की बैठीगी। चान्नो रा चेहरा खिलीगा। तिसा नेड़े बगला दे बैठणे वाली तिसारी सहेली 'बान्नो' थी। एकी कनारे 'कृष्ण लीला' चली तो दुज्जे कनोर तिन्हा दूंह री मैहजर लीला।

लोक कथा सुणने दूरा–दूरा ते आऊरे थे। चान्नो–बान्नो री आपणिया कथा–कहाणिया चालिया। तिन्हा बऊती टैमो बाद गल्ल–बात करने रा मोका मिलुरा था। आज तिन्हा खूब आपबितिया सुणनी–सुण्यणिया। तिन्हा आपणिया लीला ते मतलब आ। लोका खे बी ए पता था भई ए दोनों जण्हिया कुछ सुणने बी आओ। बल्कि आपणिया–आपणिया सण्वाई की जिऊ हल्का करने री तईं घरो ते आई जाओ। कईया खे बड़ा गुस्सा आओ इन्हारे लछ्णा देखी की। बोली कुछ बी सको। एहड़ा लगेआ जणिए ए दोनों सच्चों खे ई बड़िया ई पज्वारनी, पाठ–पूजा करने वालिया हुंगिया। दुनिया दे पणमेसरो खे मानणे वालि़या सिर्फ आसे ई आ। आखिर ए ई तो सेओ चाला करो थिया।

सबीरी आपणी–आपणी पसन्द ई। फेर जयकारा बल्वाया गया। दूंह जयकारा दोनों हाथ खड़े करी की कित्या। पर मूहें ते कुछ नी बोल्या। चान्नो आपणा मूंह बान्नो रे कानो साथे लगाई की कुछ हौले–हौले बोल्या। कथा सुणने आऊरिया दूंह जणिए गल्ला रा पैंतरा बदली की लोका खे दसणा चांहआ भई आसे बड़िया धर्मात्माईआ। थोड़ी देर तो

फेर शुरू हुई गी तिन्हारी राम कहाणी। चुप बैठणा, बैठी की कोई धर्मो री गल्ल सुणनी तो तिन्हारे कर्मो दे ई नी आ। एक बोलो, हऊं तो रोज तड़के उठी की न्हाई–धोई जाऊं। फेर आपणे ठैकरा खे धूप जलांऊ। पूजा–पाठ करूं, पूजा करदे ई माखे दोपहर हुई जाओ। फेर कथा सुणने रा टैम हुई जाओ। घरो रोटी–टुकड़ा करी की, पशुआ खे घाह–पाणी करी की आऊं। दुज्जी बोलो–माखे तो काम ई इतना ए जे बड़िया कठणा ते पणमेसरो रा नाओं सुणने रा टैम नकालूं। म्हारे तो अंकुए रे पापा आपु सम्हाली लो पिछेते घरो सा सारा काम। अड़िए आज मजा आईगा। कथा नी हुन्दी तो आसा केई मिलणा था। केई सुणनिया थिया एकी–दुज्जियारिया राम कहाणिया। आज कथा रा आखरी दिन था। कथा खत्म होणे ते बाद आरती हुई होर सबी खे नवेद बांडेया गया।

कई तो सचमुच ई कथा रे बोल सुणी की बड़े प्रभावित हुए। तिन्हारे दिलो–मनो पान्दे बड़ा असर पया। कुछ तो तिन्हे सिखेया। जो सुणेया तेस आपणे जीवनो दे त्वारना चाहिए। पर कुछ एहड़े बी एक चान्नो–बान्नो साई जिन्हां खे आपणिया लुत–करूतिया सुणने–सण्वाणे रा समय मिलिगा। इन्हा सांई कई मरद बी एहेड ई मिलणे। सै बी कथारेनाओं पान्दे कुछ मरद बी एहेड ई मिलणे। सै बी कथा रे नाओं पान्दे कुछ सिखणे आओ, मनोरिया शान्ति तईं कुछ सुनने आओ। पर फायदा तेबे ई आ जे सेओ कबाटा तो सुबाटा खे ग्रहण करो। संसारो दे अच्छे–नेक माण्हू बी ए। सब ई थोड़े ए चान्नो–बान्नो।

29 हजार करोड़ के निवेश से...

(पृष्ठ 1 का शेष) जाएं। उन्हों ने कहा कि इन सभी घरानों ने उनके मुम्बई व अन्य क्षेत्रों के दौरे के दौरान प्रदेश में निवेश करने की इच्छा व्यक्त की थी। उन्होंने कहा कि देश-विदेश में आयोजित किए गए 'रोड शो' के दौरान हुए कार्यों में प्रगति की लगातार समीक्षा की जानी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी विभागों को उन अग्रणी औद्योगिक घरानों के साथ सम्पर्क में रहना चाहिए, जिन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित 'रोड शो' के दौरान इस प्रदेश में निवेश की इच्छा व्यक्त की है। इन उद्यमियों में देश-विदेश के निवेशक शामिल हैं।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि इन्वेस्टर मीट को सफल बनाने के लिए 'राइजिंग हिमाचल डॉट इन' वैबसाइट तथा 'राइजिंग हिमाचल' मोबाइल ऐप विकसित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि इन सुविधाओं का प्रदेश में विद्यमान निवेश की संभावनाओं को दर्शाने में अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि निवेशकों को बेहतर सुविधा प्रदान करने तथा परियोजनाओं की ऑनलाइन निगरानी करने के उद्देश्य से हिमप्रगति पोर्टल भी विकसित किया गया है। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार भूमि की उपलब्धता जानने के लिए 'लैंड बैंक पोर्टल' भी तैयार किया है, जिसमें निजी व सरकारी दोनों प्रकार की उपलब्ध भूमि का पता चल सकेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस समय 1600 एकड़ सरकारी भूमि तथा 618 एकड़ निजी भूमि उद्योग स्थापित करने के लिए उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि सभी विभागों को चाहिए कि प्रदेश में अनुपयोगी पड़ी भूमि एवं भवनों को चिन्हित करें ताकि निवेश के उद्देश्य के लिए इसका प्रयोग किया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश में निवेशकों को आकर्षित करने के लिए नीतियों में भी सुधार लाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्रों के प्राधिकरणों को भी प्रदेश में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वह स्वयं भी सम्बन्धित मंत्रालयों से ऐसी संभावनाओं को अमल में लाने के लिए बात करेंगे।

बैठक में यह भी प्रस्ताव रखा गया कि शिमला तथा कुल्लू में उद्यमियों की सुविधा के लिए छोटे सम्मेलन आयोजित किए जाएं क्योंकि यहां पर्यटन, स्वास्थ्य, आईटी, शिक्षा एवं कौशल विकास, विद्युत तथा रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों में निवेश की व्यापक संभावनाएं हैं। इससे इच्छुक उद्यमियों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने में सुविधा होगी। मुख्य सचिव बी. के अग्रवाल ने मुख्यमंत्री को आश्वासन दिया कि प्रदेश में निवेश के निर्धारित लक्ष्य को पाने के लिए उद्यमियों को हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी। अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. श्रीकांत बाल्दी व अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

औद्योगिक स्वीकृतियों के लिए तय होगी समय सीमा

उत्तराखण्ड राज्य के एकल खिड़की स्वीकृति प्राधिकरण पर शिमला में मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के समक्ष एक प्रस्तुतीकरण दिया गया। इस दौरान जानकारी दी गई कि निवेशकों की सुविधा के लिए उत्तराखण्ड एकल खिड़की सेवा का अधिकार अधिनियम, 2011 के अंतर्गत 100 निवेशक सेवाएं अधिसूचित की गई हैं। प्रस्तुतीकरण के दौरान जानकारी दी गई कि उत्तराखण्ड एकल खिड़की के माध्यम से औद्योगिक इकाइयों को स्वीकृतियां प्रदान करने के लिए दो स्तरीय प्रणाली अपनाई जा रही है जिनमें सैद्धांतिक स्वीकृतियां और विभागीय स्वीकृतियां शामिल है। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में भी औद्योगिक इकाइयों को समयबद्ध स्वीकृतियां प्रदान करने के लिए एकल खिड़की स्वीकृति प्राधिकरण को एक निर्धारित समय सीमा में कार्य करने के लिए कहा जाएगा।

वन सम्पदा के संरक्षण के एवज...

(पृष्ठ 1 का शेष) की उपलब्धता एक बड़ी बाधा है। इसलिए प्रदेश में एक बड़े हवाई अड्डे का निर्माण बहुत आवश्यक है। उन्हों ने कहा कि हिमालयी राज्यों में सड़कों का निर्माण बहुत मंहगा है जबकि नेटवर्क लगभग न के बराबर है। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 276 व 280 के अंतर्गत आर्थिक रूप से कमजोर और कम राजस्व वाले राज्यों को पर्याप्त अनुदान प्रदान करने का प्रावधान किया गया है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण हिमालयी राज्य विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के प्रति बहुत संवेदनशील हैं। इसलिए यह जरूरी है कि केन्द्र सरकार एसडीआरएफ के अन्तर्गत इन राज्यों को धन का पर्याप्त आवंटन सुनिश्चित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश की अधिकांश नदियों का उद्गम हिमालय से होता है और हिमालयी राज्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जल संरक्षण पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

उन्हों ने कहा कि अधिकांश हिमालयी राज्यों को वित्त प्रबंधन के लिए केन्द्र सरकार और योजना आयोग पर निर्भर रहना पड़ता है लेकिन योजना आयोग को बन्द किए जाने से इन राज्यों को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि हिमाचल सरकार गंभीर प्रयास कर रही है कि सतत् विकास के लक्ष्य को वर्ष 2030 के बजाय 2022 तक प्राप्त कर लिया जाए और लोगों के 'इज ऑफ लिविंग' स्तर को भी बढ़ाया जाए।

हिमालयी राज्यों को सांझा मंच प्रदान करने के लिए उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री टी.एस. रावत के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह सम्मेलन ऐतिहासिक होगा क्योंकि इससे हिमालय के तट में बसे राज्यों के विकास के लिए एक रोड मैप तैयार होगा। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में हिमालयी क्षेत्र की नदियों, ग्लेशियरों, जल संसाधनों, आपदा प्रबन्धन, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं, पर्यटन और कल्याण क्षमता और हिमालयी राज्यों के लिए विशेष प्रोत्साहन पर हुई चर्चा इन राज्यों के समग्र एवं सतत् विकास के लिए ठोस रणनीति बनाने में महत्वपूर्ण पहल साबित होगी।

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस अवसर पर कहा कि हिमालयी राज्यों पर यह बड़ा उत्तरदायित्व है कि वे हिमालय क्षेत्र के वातावरण को बचाने में अपना भरपूर सहयोग दें। उन्होंने कहा कि हिमालयन पारिस्थितिकी को संरक्षित रखने के लिए दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने की आवश्यकता है। इन राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों में उचित बुनियादी ढांचा तैयार किया जाना चाहिए ताकि इन क्षेत्रों से लोगों के पलायन को रोका जा सके।

15वें वित्त आयोग के अध्यक्ष एन. के. सिंह ने कहा कि आयोग से हिमालयी राज्यों की उम्मीदें न्यायसंगत हैं और आयोग भी इन राज्यों की विकासात्मक आवश्यकताओं से पूरी तरह से अवगत है। उन्होंने कहा कि आयोग ने सतत् विकास के लिए हिमालयी राज्यों द्वारा की गई पहल के मूल्यांकन के लिए कुछ मापदण्ड निर्धारित किए हैं और वित्त आयोग इनकी आशाओं पर खरा उतरने का हर संभव प्रयास करेगा।

नीति आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र देश के 18 प्रतिशत भौगोलिक हिस्से में बसा है जिसमें अपार क्षमताएं हैं। हिमालयी राज्यों को आगामी पांच वर्षों में प्रति व्यक्ति आय को दोगुना करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य नदियों, ग्लेशियरों, झीलों और जल स्त्रोतों का संरक्षण है।

मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड कोंगकल संगमा ने कहा कि हिमालयी राज्यों का हिमालय क्षेत्र की पारिस्थितिकी को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान है और इन राज्यों को हो रहे राजस्व नुकसान को ध्यान में रखते हुए समुचित मुआवजा दिया जाना चाहिए।

नागालैंड के मुख्यमंत्री निफयु रियो ने आशा व्यक्त की कि 15वां वित्त आयोग हिमालयी राज्यों की मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगा।

अरूणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री चौना मेंन ने वित्त आयोग से हिमालयी राज्यों के मुद्दों को प्रभावी रूप से केन्द्र सरकार के समक्ष रखने का आग्रह किया।

मिजोरम के कानून व पर्यावरण मंत्री टी.जे. लालनुंतलुंगा ने अपने राज्य में सीमावर्ती सड़कों को मजबूत करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध करवाने का आग्रह किया।

सिक्किम के मुख्यमंत्री के मुख्य आर्थिक सलाहकर महेन्द्र पी. लामा ने नए सिक्किम के निर्माण के लिए सिक्किम के मुख्यमंत्री के दृष्टिकोण को रेखांकित किया।

त्रिपुरा के मंत्री लै. जनरल मनोज कांत देव ने भी अपने विचार सांझा किए। भारत सरकार की पेयजल और स्वच्छता सचिव परमेस्वरन अय्यर ने 'जल शक्ति अभियान' को एक जन आन्दोलन बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

कृमि नाशक अभियान में...

(पृष्ठ 1 का शेष) उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय डिवॉर्मिंग कार्यक्रम वर्ष 2015 के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व तथा केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा के कार्यकाल के दौरान आरम्भ किया गया था।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मानक राष्ट्रीय मानकों से कहीं बेहतर है तथा प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में और सुधार करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि यह एक निरन्तर प्रक्रिया है तथा स्वास्थ्य अधोसंरचना में और सुधार लाने के लिए स्वास्थ्य कार्यक्रमों में लोगों को शामिल करने के प्रयास किए जा रहे हैं तथा स्वास्थ्य क्षेत्र का बजट भी बढ़ाया गया है।

विशेष सचिव स्वास्थ्य एवं मिशन निदेशक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) डॉ. निपुण जिंदल ने हिमाचल में डिवार्मिंग कार्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 1 मई, 2019 को 1-19 वर्ष आयुवर्ग के सभी सरकारी तथा निजी स्कूलों के विद्यार्थियों, शेष छात्रों तथा आंगनवाड़ी के विद्यार्थियों को एलबेंडाजॉल दवाई दी गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 98 प्रतिशत बच्चों को डिवॉर्मिंग की दवाई दी गई है।

गैर सरकारी संगठन एविडेंस एक्शन, जो भारत सरकार का तकनीकी सहायक भागीदार है, की कंट्री डायरेक्टर डॉ. प्रिया झा ने हिमाचल प्रदेश में एसटीएच फॉलो-अप प्रिवेलेंस सर्वेक्षण पर प्रस्तुति दी।

उन्होंने कहा कि नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल द्वारा वर्ष 2015 में करवाए गए सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल प्रदेश में बच्चों में 29 प्रतिशत एसटीएच प्रिवेलेंस दर्शाया गया है, जबकि अक्तूबर, 2018 के सर्वेक्षण के अनुसार यह केवल अनुमानित 0.3 प्रतिशत पाया गया है।

सेब खरीद के लिए मण्डी मध्यस्थता योजना को स्वीकृति

राज्य सरकार ने इस वर्ष के दौरान राज्य में सेब की खरीद के लिए मण्डी मध्यस्थता योजना (एमआईएस) को लागू करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस योजना को 20 जुलाई, 2019 से 31 अक्टूबर, 2019 तक लागू किया जाएगा। इस योजना के तहत लगभग 1.48 लाख मीट्रिक टन सेब की खरीद का लक्ष्य रखा गया है। यह खरीद 8.00 रुपये प्रति किलो की दर से की जाएगी जबकि हैंडलिंग शुल्क 2.75 रुपये प्रति किलोग्राम होगा। प्रवक्ता के अनुसार फल उत्पादकों की मांग के अनुसार प्रदेश में 279 खरीद केंद्र खोले जाएंगे, जिनमें से 162 संग्रहण केंद्रों को एचपीएमसी द्वारा तथा 117 केन्द्रों को हिमफैड द्वारा संचालित किया जाएगा।

प्राथमिक पाठशालाओं में आरम्भ...

(पृष्ठ 1 का शेष) सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करने व पाठशालाओं में अध्ययन के परिणाम को बेहतर बनाने में भी सहायक सिद्ध होगी। इस कार्यक्रम से शिक्षकों को भी सहायता मिलेगी। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य के साथ-साथ देश में शिक्षा के क्षेत्र में भारी परिवर्तन आया है। राज्य सरकार ने शैक्षणिक और प्रशासनिक सुधारों के साथ शिक्षा के लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाया है। सरकार अब नए संस्थानों को खोलने के बजाय मौजूदा संस्थानों को मजबूत करने पर अधिक जोर दे रही है।

मुख्यमंत्री ने सम्पर्क फाउंडेशन द्वारा इस परियोजना के लिए 25 करोड़ रुपये का योगदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हालांकि हिमाचल प्रदेश एक छोटा राज्य है, लेकिन इसने विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से प्रगति की है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में, यह प्रदेश देश का अग्रणी राज्य के रूप में उभरा है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किए गए दो नए ऐप शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने में मददगार साबित होंगे। उन्होंने कहा कि सीवी रमन वरच्युल क्लास रुम को राज्य में शुरू किया जाएगा, जिससे प्रौद्योगिकी के माध्यम से छात्रों को शिक्षण की बेहतर सुविधाएं प्रदान होंगी।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में गरीब परिवारों के 500 मेधावी छात्रों को कोचिंग की सुविधा प्रदान करने के लिए मेधा प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में तैयारी के लिए एक लाख रुपये प्रति विद्यार्थी सहायता प्रदान की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने स्कूलों में शिक्षा प्रणाली की निगरानी करने के लक्ष्य से 'शिक्षा साथ मोबाईल ऐप' का भी शुभारम्भ किया। यह ऐप ऑफलाईन भी कार्य करेगी। उन्होंने समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत अध्यापकों और अभिभावकों के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए ई-सम्वाद मोबाईल ऐप का भी शुभारम्भ किया। यह सुविधा राज्य के 15,000 विद्यालयों में उपलब्ध करवाई जाएगी।

शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज ने इस अवसर पर स्मार्टशाला किट जारी करते हुए कहा कि राज्य सरकार विद्यार्थियों को गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। पिछले एक साल में प्रदेश में लगभग 6,000 प्राथमिक शिक्षकों की भर्ती की जा चुकी है।

प्रधान सचिव शिक्षा के.के पंत ने कहा कि पहाड़ी राज्य होने के बावजूद हिमाचल प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय प्रगति की है। सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए) के परियोजना निदेशक आशीष ने कहा कि राज्य सरकार और सम्पर्क फाउन्डेशन प्रदेश के सभी 10,661 सरकारी प्राथमिक पाठशालाओं में सम्पर्क स्मार्टशाला शुरू करेंगे जिससे राज्य के लगभग 3.2 लाख विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

सम्पर्क फाउन्डेशन के संस्थापक निदेशक विनीत नायर ने कहा कि वर्तमान में फाउन्डेशन देश के छः राज्य के 76,000 विद्यालयों में सम्पर्क स्मार्ट शाला चला रहा है। सम्पर्क स्मार्ट शाला की अध्यक्ष कुसुम महापात्रा ने कहा कि सम्पर्क फाउन्डेशन ने वर्ष 2020 तक देश में 650 करोड़ रुपये के निवेश की योजना बनाई है।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय कोटशेरा में लगभग 9 करोड़ रुपये कि लागत से निर्मित प्रशासनिक एवं विज्ञान खण्डों का शुभारम्भ किया।

पहाड़ों में तेज होगी...

(पृष्ठ 1 का शेष) में भाग लिया।

श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने कहा कि इससे पूर्व, जून माह में मंत्री स्तर की बैठक में उन्होंने हिमालयी राज्यों से इन सभी महत्त्वपूर्ण मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से केन्द्र सरकार के साथ उठाया था तथा इन मुद्दों पर जल शक्ति केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री और सम्बन्धित सचिवों से विस्तृत चर्चा की थी, जिसके परिणाम स्वरूप हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित सभी पहलुओं को इन योजनाओं में सम्मलित किया गया है।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में 57 प्रतिशत बस्तियों को जलापूर्ति प्रदान की जा चुकी है लेकिन पुरानी योजनाओं में हर घर को पेयजल उपलब्ध करवाने का कोई प्रावधान नहीं था। हर घर को जल उपलब्ध करवाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य ने अतिरिक्त धनराशि की मांग की थी।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने योजना के तहत हर घर को पेयजल उपलब्ध करवाने में सराहनीय कार्य करने वाले राज्यों को प्रोत्साहन देने का भी निर्णय लिया है।

योजना के अंतर्गत पहाड़ी राज्यों के लिए 28 से 30 हजार रुपये प्रति व्यक्ति और अन्य राज्यों के लिए 15 हजार रुपये प्रदान किए जाएंगे। जो राज्य योजनाओं की डीपीआर सर्वप्रथम प्रस्तुत करेंगे उन राज्यों को पहले धनराशि दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि इस संबंध में सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग ने विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बना ली है और वित्तीय संस्थाओं को वित्तपोषण के लिए प्रेषित कर दिया गया है। इस योजना की डीपीआर भी भारत सरकार को स्वीकृति के लिए शीघ्र भेजी जाएगी।

शिमला, सिरमौर व...

(पृष्ठ 1 का शेष) बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी करेंगी। देश के 648 जिलों में से 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ अभियान' में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 जिलों का चयन हुआ है, जिसमें प्रदेश के तीन जिले शामिल हैं। सिरमौर में 2011 की जनगणना के मुताबिक कन्या जन्म दर लिंगानुपात 918 था जो अब बढ़कर 963 हो गया है। नाहन विकास खंड की क्यारी पंचायत ने 2014 के आंकड़ों के अनुसार 1000 बेटों की तुलना में 1431 बेटियों ने जन्म लिया था। वर्ष 2018-19 के दौरान जिला में कन्या शिशु लिंगानुपात 1004 दर्ज होने के आधार पर यह सर्वश्रेष्ठ अवार्ड मिलने जा रहा है जोकि जिला के लिए हर्ष एवं गौरव का विषय है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने 7 अक्तूबर, 2018 को मंडी जिला में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान का शुभारंभ किया था। यह अपने आप में एक शानदार उपलब्धि है कि एक साल से भी कम के अरसे में इस अभियान के लिए जिला को दूसरी बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है।

 डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2018-2020 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

मॉडल कॅरिअर सेंटर के रूप में परिवर्तित होंगे जिला रोजगार कार्यालय

उद्योग, श्रम एवं रोजगार मंत्री बिक्रम सिंह ने विभाग की विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि कौशल विकास भत्ता योजना के अन्तर्गत इस वर्ष 100 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष 48,520 युवाओं का पंजीकरण कर उन्हें 56.78 करोड़ रुपये के वित्तीय लाभ प्रदान किए गए। योजना के अन्तर्गत उन सभी युवाओं का पंजीकरण किया जा रहा है, जिनकी मासिक आय 15 हजार रुपये से कम है। राज्य के सभी जिला रोजगार कार्यालयों को मॉडल कॅरियर सेंटर में परिवर्तित किया जा रहा है ताकि युवाओं को निःशुल्क करियर काउंसलिंग प्रदान की जा सके। इसके अन्तर्गत अभी तक शिमला में चार हजार युवाओं को करियर काऊंसलिंग की सुविधा दी जा चुकी है तथा 300 युवाओं को रोजगार भी प्रदान किया गया है। उन्होंने जानकारी दी कि एशियन डवल्पमेंट बैंक द्वारा राज्य में चार मॉडल करियर सेंटर्स खोलने के लिए 10.30 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। उद्योग मंत्री ने कहा कि राज्य में गत वर्ष सात रोजगार मेले आयोजित किए गए जिनमें 9600 युवाओं को निजी व सार्वजनिक क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध करवाया गया। इस वर्ष आयोजित होने वाले रोजगार मेलों का कैलेंडर जारी कर दिया गया है जिसके तहत सिरमौर जिला में 28 जुलाई को रोजगार मेले का आयोजन किया गया। चम्बा में 27 अगस्त, हमीरपुर में 20 सितम्बर, कांगड़ा में 11 अक्तूबर, सोलन में 18 नवम्बर, बिलासपुर में 20 दिसम्बर, शिमला व ऊना में 21 जनवरी, 2020 व कुल्लू में 14 फरवरी को रोजगार मेलों का आयोजन किया जाएगा।

प्रारंभ में चार केंद्रों के लिए 20.30 करोड़ स्वीकृत

पौधरोपण के लिए शुरू होगा मुख्यमंत्री हरित विद्यालय अभियान

प्रदेश सरकार राज्य में विद्यमान प्राकृतिक सौन्दर्य व वन आवरण में वृद्धि तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। इसी दिशा में हिमाचल प्रदेश शिक्षा बोर्ड, शिक्षा विभाग तथा वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 9 से 16 अगस्त, 2019 तक 'मुख्यमंत्री हरित विद्यालय अभियान' में स्कूली छात्रों को शामिल कर प्रदेश भर के विद्यालयों में पौधरोपण किया जाएगा। यह बात शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज ने गत दिनों शिमला में प्रदेश के सभी ज़िलों के प्रतिनिधियों के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित बैठक के दौरान कही। उन्होंने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं तथा उनके योगदान के बिना राष्ट्र निर्माण संभव नहीं है। आज जहां पूरा विश्व ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटने के उपायों पर कार्य कर रहा हैं, वहीं सभी लोगों, विशेषकर बच्चों का इस समस्या के निवारण में शामिल होना बेहद आवश्यक हो जाता है।

प्रदेश सरकार ने वन कटान पर प्रतिबन्ध लगाया है तथा हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना के तहत गैस कुनैक्शन उपलब्ध करवाकर भी पेड़ों के कटान में कमी आई है। पौध रोपण अभियान में वन विभाग के अधिकारी सम्बन्धित क्षेत्र के अनुसार पौधों के चयन में सहायता प्रदान करेंगे तथा विद्यार्थियों को वनों तथा पर्यावरण की महत्ता के बारे में शिक्षित करेंगे। अभियान के दौरान प्रत्येक प्राथमिक व माध्यमिक पाठशाला में 5-5 पौधे व उच्च तथा वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला में 10-10 पौधे रोपित किए जाएंगे। इसी उद्देश्य के लिए 9 अगस्त, 2019 को जिला ऊना की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सलोह से मुख्यमंत्री हरित विद्यालय अभियान आरम्भ किया जा रहा है। अभियान का समापन 17 अगस्त, 2019 को मुख्यमंत्री द्वारा धर्मशाला में किया जाएगा।

मुख्यमंत्री द्वारा 17 अगस्त को धर्मशाला में किया जाएगा अभियान का समापन

सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क होगा स्क्रब टाइफस का उपचार

अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्वास्थ्य) आर.डी. धीमान ने गत दिनों शिमला में प्रदेश में फैल रहे स्क्रब टाइफस से निपटने की तैयारी व इसके नियंत्रण को लेकर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने बताया कि प्रदेश में अब तक स्क्रब टाइफस के 220 मामले दर्ज किए गए हैं जिनमें 89 मामलें जिला बिलासपुर, 43 कांगड़ा, 42 हमीरपुर, 20 मंडी, 9 शिमला, 8 सोलन, 6 चम्बा, 1 कुल्लू, 1 किन्नौर तथा 1 मामला सिरमौर में दर्ज किया गया है। श्री आर.डी. धीमान ने कहा कि पिछले 3-4 सालों में स्क्रब टाइफस के मामलो में वृद्धि नजर आई है लेकिन समय पर जानकारी और इलाज के चलते, कम लोगों की मृत्यु हुई है। उन्होंने कहा कि स्क्रब टाइफस बीमारी से बचाव के लिए पूरी आस्तीन के कपड़े पहनकर ही खेतों में जाएं क्योंकि स्क्रब टाइफस फैलाने वाला पिस्सू, शरीर के खूले भागों को ही काटता है। घरों के आस-पास खरपतवार इत्यादि न उगने दें। उन्होंने बताया कि तेज़ बुखार जो 104 से 105 डिग्री तक जा सकता है, सिर व जोड़ों में दर्द व कंपकंपी के साथ बुखार, शरीर में ऐंठन, अकड़न या शरीर टूटा हुआ लगना आदि स्क्रब टाइफस के लक्षण हैं। स्क्रब टाइफस के अधिक संक्रमण में गर्दन, बाजुओं के नीचे या कुल्हों के ऊपर गिल्टियां भी हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि स्क्रब टाइफस बीमारी की जांच व इलाज की सुविधा सरकारी अस्पतालों में निशुल्क उपलब्ध है और सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में इसके इलाज के लिए दवाइयों भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

हिमाचल लोक सेवा आयोग के ऑनलाइन परीक्षा केन्द्र का शुभारम्भ

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने शिमला में हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग में 1.75 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित आधुनिक ऑनलाइन कम्प्यूटर आधारित परीक्षा केन्द्र का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि आयोग समाज के उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है क्योंकि इस संस्था से राज्य की सेवा के लिए प्रतिभावान डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक और अन्य अधिकारी चयनित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में लोगों को पारदर्शी, तत्पर और जवाबदेह व प्रशासन उपलब्ध करवाने के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आईटी के प्रभावी इस्तेमाल से न केवल कठिन कार्य को कम समय में पूरा किया जा सकता है बल्कि अभियार्थियों का विश्वास भी आयोग के प्रति बढ़ेगा।

उन्होंने कहा कि अब, आयोग ऑनलाइन और ऑफलाइन परीक्षाएं अपने परीक्षा भवन में ही संचालित कर सकेगा तथा कहा कि इस प्रणाली से आयोग की विशेषकर ऑनलाइन परीक्षाएं करवाने की प्राइवेट आईटी लैब पर निर्भरता कम होगी और आयोग समयबद्ध तरीके से ऑनलाइन परीक्षा कराने में स्वयं सक्षम होगा। उन्होंने कहा कि एक ही समय में आयोग लगभग 350 अभ्यार्थियों की ऑनलाइन व ऑफलाइन परीक्षा लेने में समर्थ होगा।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि आईटी के पूर्ण इस्तेमाल से अभ्यार्थियों को उनके दस्तावेजों को ज़मा करवाने के लिए शिमला नहीं आना पड़ेगा। अब अभ्यार्थियों को परीक्षा के एडमिट कार्ड ऑनलाइन उपलब्ध होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार अभ्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए धर्मशाला में सुविधा केन्द्र स्थापित करने की मांग पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी। शिक्षा मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि यह अत्यंत खुशी का विषय का है कि राज्य लोक सेवा आयोग देश के उभरते हुए सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में से एक है। हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष मेजर जनरल डी.वी.एस राणा ने आयोग ने अभ्यार्थियों को चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता, अभ्यार्थियों के वन टाइम रजिस्ट्रेशन, ऑनलाइन कम्प्यूट्रीकृत परीक्षा आयोजित करवाने जैसे कार्य में आईटी का अधिकतम इस्तेमाल सुनिश्चित किया है। राज्य लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. मान सिंह, श्रीमती मीरा वालिया, डॉ. रचना गुप्ता, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त प्रधान सचिव श्री संजय कुंडु, हिमाचल प्रदेश एग्रो पेकेजिंग कॉपरेशन के प्रबंध निदेशक श्री मदन चौहान, आयोग की सचिव सुश्री राखी केहलों, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के निदेशक श्री हरबंस सिंह ब्रसकोन भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

ऑनलाइन व ऑफलाइन परीक्षा में अब एक साथ परीक्षा दे सकेंगे 350 अभ्यर्थी

विकास कार्यों की ऑनलाइन निगरानी से निष्पादन में आई तेजी

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने प्रदेश के सभी अधिकारियों को विकासात्मक योजनाओं के प्रभावकारी कार्यान्वयन के प्रति अग्रसक्रिय रवैया अपनाने के निर्देश दिए हैं ताकि निर्धारित समय में चल रही परियोजनाओं के कार्यों को पूरा किया जा सके और वांछित लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सके। मुख्यमंत्री शिमला में 'हिम विकास समीक्षा' की प्रथम बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 'हिम विकास समीक्षा सेवा' राज्य सरकार की ऐसी अभिनव पहल है, जिससे विकासात्मक परियोजनाओं के कार्यों की प्रगति की लगातार समीक्षा की जा सकेगी तथा इससे विकास कार्यों में तेजी भी आएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 21 विभागों के लिए 103 मुख्य कार्यनिष्पादन संकेतक निर्धारित किए गए हैं, जबकि 26 विभागों के लिए ऐसे चार संकेतक बनाए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी विभागों के कार्यों की समीक्षा के लिए यह एक ऐसा तंत्र विकसित किया गया है, जिससे अलग-अलग विभागों की समीक्षा करने की बजाय अब सभी विभागों का एक साथ आकलन संभव हो सकेगा। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों में तेजी लाने के लिए पारम्परिक तरीकों की बजाय अब ऑनलाइन रिपोर्टिंग अपनाई जा रही है, जिससे कार्यों के निष्पादन में तेजी आई है और पारदर्शिता भी बढ़ी है।

श्री जय राम ठाकुर ने लोक निर्माण विभाग को भी अपने कार्यों की निगरानी रखने के लिए प्रबंधन का ऐसा सूचना तंत्र विकसित करने के निर्देश दिए, जिसमें विभाग के सभी कार्य ऑनलाइन दर्शाए जा सकें। उन्होंने कहा कि वन अधिनियम तथा वन संरक्षण अधिनियम के मामलों को शीघ्र निपटाने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि वन स्वीकृतियों के कारण विकासात्मक परियोजनाओं को आरम्भ करने में विलम्ब न आए।

उन्होंने कहा कि ऐसी परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए, जिनमें 60 प्रतिशत से अधिक कार्य हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि कार्यों में तेजी लाने के समय गुणवत्ता पर किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा तथा कोताही बरतने वाले ठेकेदारों अथवा कर्मचारियों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

- विकासात्मक परियोजनाओं की समीक्षा के लिए हिम विकास सेवा आरंभ
- लोक निर्माण विभाग को ऑन लाइन निगरानी प्रणाली विकसित करने के निर्देश

उन्होंने कहा कि प्रदेश में फसलों की कटाई/तुड़ाई के उपरांत बेहतर प्रबन्धन तथा खाद्य प्रसंस्करण की दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि कृषि विभाग को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कृषकों को उनके उत्पाद के समुचित दाम मिल सकें। उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्राकृतिक खेती को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि यह प्रदेश देश का एक प्राकृतिक खेती करने वाला राज्य बन सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करने पर भी बल दिया जाना चाहिए ताकि युवाओं को रोजगार के अधिक से अधिक अवसर मिल सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को और अधिक सक्षम बनाने की दृष्टि से गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि हिमाचल एक छोटा राज्य होने के बावजूद प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है और सरकार इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर राज्य बजट का लगभग 20 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च कर रही है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में 5.34 लाख से भी ज्यादा जरूरतमंद लोगों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान की जा रही है और सरकार के पास सामाजिक सुरक्षा पेंशन का कोई भी मामला लम्बित नहीं है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में चल रही अनेक योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से जागरूकता अभियान आरम्भ करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि कुपोषण तथा शिशु मातृत्व देखभाल जैसे क्षेत्रों पर विभाग को विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

मुख्य सचिव बी.के. अग्रवाल ने मुख्यमंत्री को आश्वासन दिया कि प्रदेशवासियों की आशाओं एवं आकांक्षाओं पर खरा उतरने के हर संभव प्रयास किए जाएंगे। मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं प्रधान सचिव डॉ. श्रीकांत बाल्दी ने बैठक का संचालन किया तथा विभिन्न विभागों में निर्धारित लक्ष्यों के बारे अवगत करवाया।

idk'kd ,o i/kku lEiknd% gjcl flg cl dku] fun'kd] lpuk ,o tu lEid foHkkx] fg-i- f'keyk&171002] eæd% uhjt dekj] fu;=d] eæ.k rFkk y[ku lkexh foHkkx] f'keyk&171005] Qku% 2830381&PBX.A29] ofj"B lEiknd% foukn Hkkj}kt] lEiknd% on idk'k
dk;ky;% fg-i- eæ.kky; ifjlj] f'keyk&171005] Qku% 2633145 o QDl% 2830374] b&ey% girirajhp@gmail.com. OR girirajweekly 1978 @yahoo.co.in ikflr LFkku% fxfjjkt dk;ky;A ¼fxfjjkt lkIrkfgd e idkf'kr y[kk e 0;Dr fopkjk l lEiknd; lgefr vfuok;l ugh½